मेहर बाबा का संदेश ।

तटवर्ती वीर राघवराव

मेहर बाबा का संदेश।

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्री नागेश्वराव

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.100/-

सूची

1. गुरु का सहायता। 3

2. मेहर बाबा क्या कहते हैं? 12

1. शुभेच्छा । 30
2. विचारण । 34
3. तनु मानसम । 38
4. सत्वा पत्ति । 41
5. असंशक्ति । 48
6. पदार्थ भावना । 54
7. तुरीयम । 58

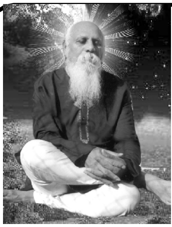

ध्यान की विधि
सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मो का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

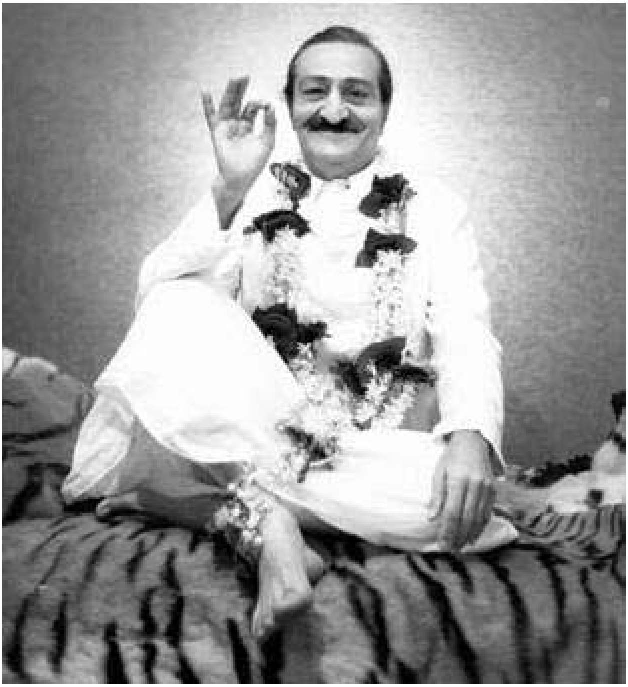

गुरु का सहायता।

अवतार मेहर बाबा जी ने सद्गुरु का कृपा कैसे होता है, यहां विवरण देते हैं।

अगर इसको हम नहीं समझेंगे असलियत में गुरु कौन है? कौन नहीं है? यह समझ नहीं आएगा। ना केवल जीवन में किया हुआ साधना को नष्ट करेंगे, अपना पूरा जीवन ही नष्ट होने का स्थिति होगा।

मेहर बाबा जी क्या कहते हैं? **'गुरु, एक साधक का आध्यात्मिक जीवन निर्दिष्ट और सुरक्षित रहने को प्रयत्न करता है'।** और कहते हैं कि **'उस साधक, मतलब शिष्य को अपना गम्य स्थान पहुंचने का समय भी कम करने को भी सहाय करता है'।**

बाबा और क्या कहते हैं? **'एक साधक अपना इस आध्यात्मिक यात्रा**

में अपनी स्वतंत्रता से ज्यादा दूर जा सकता है, लेकिन 6-वां भूमिका को पार करना, बिना गुरु का सहायता लेना, नामुमकिन है, मध्यांतर भूमिकाओं में भी फंस जा सकता है। लेकिन गुरु ऐसे नहीं होने देगा, आध्यात्मिक मार्ग में भरा पड़ा रुकावटें से, दुर्घटनाओं से, एक साधक को बचाता है'।

इसलिए मेहर बाबा कहते हैं कि गुरु का सहायता बहुत जरूरी है।

मेहर बाबा और क्या कहते हैं? **'इस आध्यात्मिक मार्ग में तीन दशों को अग्नि का तीन दशों से तुलना करता है, कबीर जी'।** देखिए, अग्नि जलने से पहले सिर्फ एक धुआँ होता है, अग्नि नहीं। बाद में धुआँ में छुपा हुआ अग्नि होता है, आखिर में बिना धुआँ सिर्फ अग्नि होता है।

यहां अग्नि का मतलब ज्ञान।

इसी प्रकार आध्यात्मिक मार्ग में प्रारंभ दशा में बहुत अज्ञानता में होता है। आखिर में बिना कुछ भ्रांतियां का, सिर्फ और सिर्फ सत्य साक्षात्कार ही होता है। उसने और कहा है कि **'आध्यात्मिक मार्ग में अनेक प्रकार के भ्रांतियां होते हैं, इसलिए सिर्फ एक गुरु ही उनको पार करवा सकता है क्योंकि उन्हें हर दशा को जानता है'।**

'गुरु का मार्गदर्शन बिना, कोई भी साधक सुरक्षित नहीं रह सकता है, और यह ही नही गुरु का आवश्यकता भी, और गुरु का सहायता के बारे में भी, मेहर बाबा जी ने बोध किया है'। इसलिए इनके बारे में थोड़ा गहराई में जानते हैं।

अभी जो भी ध्यान मार्ग में आ चुके हैं वह सब आध्यात्मिक मार्ग में आ चुके हैं! एक प्रकार कह सकते हैं कि वह लोग मोक्ष मार्ग में आ चुके हैं! मोक्ष का मतलब शाश्वत के लिए दुख से बाहर निकलना। दुख का मतलब अनेक समस्याओं का मिलावटों का बाधा है।

मानव को एक या दो समस्या ही नहीं, बहुत प्रकार के समस्याओं होते हैं। न केवल रोगों का समस्या, परिवार में समस्या, आर्थिक समस्या बुढ़ापे में

समस्या अपने आजू-बाजू लोगों के साथ समस्या, ऐसे कई प्रकार के समस्याओं होते हैं। इन सब से शाश्वत के लिए बाहर निकलना ही मोक्ष कहते हैं। देखिए अगर आप एक रोग को ठीक करता है, इसका मतलब यह नहीं है कि आप मोक्ष पा लिए हैं। कोई एक इच्छा पूरे होने से आपको मोक्ष नहीं मिलता है। इस आध्यात्मिक यात्रा में मतलब आत्मा का यात्रा में हमारा जीवन लक्ष्य मोक्ष का मतलब निर्वाण पाना है।

इसलिए ऐसे लक्ष्य को पाने के लिए एक गुरु का सहायता बहुत जरूरी है। इस गुरु हमारी यात्रा को सही तरीके से, सुरक्षित रखकर, कोई भी अवरोधों बिना , पार कर कर फिर वापस नहीं आने के लिए, आगे जाने के लिए, बहुत सहाय करता है। क्योंकि एक साधक एक छोटा सा भी गलती करने पर, वापस शुरूआत में आ जाएंगे। मतलब मामूली सी अवस्था में पहुंचेगी। मतलब जो भी कष्ट किया, साधना किया, सारे प्रयत्न सब बेकार हो जाते हैं। क्योंकि फिर वही स्थिति में पहुंचना बहुत ही मुश्किल होता है। इसलिए जब गुरु का सहायता मिलेगा, ऐसी गलतियां नहीं करते हैं।

ओशो जी ने क्या कहा? एक पहाड़ पर चढ़ने वाला बहुत जागृत होकर चढ़ना चाहिए। क्योंकि पहाड़ के अंत तक चढ़ सकते हैं, लेकिन थोड़ा सा भी फिसला तो, थोड़ा ही नहीं पूरी पहाड़ के नीचे तक गिरेगा। उसने दो महीने कष्ट करके पहाड़ पर चढ़ा, लेकिन पैर फिसलने से एकदम नीचे गिर जाते हैं। अगर दोबारा चढ़ना है तो कितना कष्ट होगा?

इसी तरह आप लोग ज़ूम क्लास में या भीमावरम तीन दिवसीय क्लास में भाग लेकर कष्ट कर कर ध्यान साधना कर रहे हैं, सही ध्यान कर रहे हैं। लेकिन कहीं भी मतलब अगर आहार विषयों में या कोई छोटी-मोटी व्यवहार में गलती करने से, पहले की स्थिति में आ जाते हैं। इसी तरह अगर अश्रद्धा से व्यवहार करने से भी, कई सालों का ध्यान साधना करके पाया गया शक्ति पूरी तरह खो जाएंगे। इसलिए मेहर बाबा जी कहते हैं कि, गुरु का सहायता बहुत जरूरी है।

मैंने मास्टर ट्रेंनिंग क्लास में, हम अपनी शक्ति को ना खोना के लिए बहुत विषयों, एक पूरा दिन, कहा था। हम अपने बढ़ोत्तरी के लिए कष्ट करते हैं, लेकिन सृष्टि में रहने वाले शक्तियों के वजह से पीछे खींच जाते हैं। इसलिए जितना आगे बढ़ाने को कोशिश करते हैं वह शक्तियां पीछे खींचते रहते हैं।

इसलिए मोक्ष पाना इतना आसान नहीं है। कारण मोक्ष का मतलब दैविक स्थिति पहुंचना, मतलब मानव को माधव बनना। इसलिए हमारे सारे प्रयत्न अभी माधव बनने के लिए ही है। इसलिए माधव बनना इतना आसान है क्या? कितने सारे रुकावटें, कितने अवरोधों, कितने परीक्षाओं होंगे?

साथ में इस प्रयत्न करने वालों को बहुत सारे कष्टों भी मिलेंगे। आप सोच सकते हैं कि क्यों मेरे लिए इतना कष्ट है? बहुत लोग समझते हैं कि ध्यान करने वालों को कुछ भी कष्ट नहीं होंगे।

इसलिए पत्री जी कहते हैं की '**कष्टों, नष्टों, अपमानों, सब आध्यात्मिक बढ़ोत्तरी के लिए सीढ़ियां ही हैं'।** इस प्रकार कष्टों से भी बहुत सीखने को मिलता है, अपनी शक्ति का एहसास कर सकते हैं।

आप सोचते होंगे कि मुझे और मेरे मैडम को कुछ नहीं हुआ है। लेकिन मुझे और मेरे मैडम को भी बहुत परीक्षाएं आए हैं। लेकिन वह सब सबको हम परवाह नहीं कर कर, आगे चले गए हैं। और पीछे नहीं देखे हैं।

जीवन के कुछ संगठनों आपको यहां बता रहा हूँ। मैं ध्यान क्लास करने के लिए बेंगलुरु से मैसूर जाने के लिए बस में चढ़ने के लिए, रोड को क्रॉस कर रहा था। पता नहीं कुछ माया मेरे ऊपर चढ़ गया था, कि एक गाड़ी आकर मुझे टक्कर दिया है। तब मैं गिर गया था। मेरा पूरा माथा टूट गया था, बहुत खून बह गया था। तब ऐसी स्थिति में मुझे वहां के कुछ लोग अस्पताल में लेकर गए थे। तब थोड़ा होश में आया था मेरे जेब में फोन था और मैंने मैडम को फोन करवाया था।

तब मैडम वापस आ गई थी। वहां पर जो छोटा डॉक्टर अपने से नहीं

होगा , कहकर बड़ा डॉक्टर को बुलाया था। उसने मेरे दाहिने आंख के ऊपर थोड़ा सिलाई किया है, और कहा था कि आपको देखना थोड़ा मुश्किल होगा, 2 महीने तक ठीक हो सकता है। मैडम आकर मुझे वहां से जान पहचान वालों के घर लेकर गई थी।

तीसरा दिन भीमावरम आ गए थे। विचित्र की बात है कि मैं एक हफ्ते में ठीक हो गया और हैदराबाद में क्लास को गया था।

बाद में एक बार मुझे हार्ट स्ट्रोक आया था। मेरे बच्चों घबरा गए थे। लेकिन पत्री जी ने दवाई को इस्तेमाल नहीं करने को कहते हैं न ? इसलिए ध्यान द्वारा ठीक करने को कोशिश किया था। तब मेरी मैडम पत्री जी को फोन करवाकर मुझे अस्पताल भेजे थे।

तब मैंने जाकर ऑपरेशन करवाया था। एक प्रकार से मैंने तीन दिन नरक का अनुभव किया हूँ। पूरा हार्ट को खोल कर, हड्डी को काटकर, बाईपास सर्जरी कर कर, दोबारा सिला दिए हैं, कितना दर्द होता है ना? लेकिन 10 दिन बाद ही मैंने पत्री जी के घर गया था । पत्री जी ने पूछे थे, इतनी जल्दी आ गए हैं क्या? इस प्रकार उसमें से बाहर आया हूँ।

बाद में रक्त संचार ठीक नहीं होने का वजह से दिमाग को खून नहीं जा रहा था। वहां पर कुछ नसों अटक गए हैं,तब मेरे मुंह बाए तरफ मुड़ गया था। बात भी ठीक नहीं आ रहा था। जब डॉक्टर को दिखाया था उसने बोला था कि वह बहुत सीरियस है तुरंत अस्पताल में भर्ती कराने को कहा था। वहां पर कुछ इंजेक्शन देने से दो-तीन दिन मैंने ठीक हो गया था।

बाद में इसी भीमाराम क्लास में ही एक बार नाखून निकल गया था। फिर भी उसकी पट्टी लगाकर तीन दिवसीय क्लास को पूरा किया था। इसी बीच में पैर थोड़ा घुमाने से हड्डी टूटा था। डॉक्टर ने पट्टी बांधकर कहा था कि 20 दिन तक का छुट्टी लेना है। लेकिन मुझे उठाकर ले जाने से मैं क्लास बता पाया था। इस प्रकार एक ही घटना नहीं, बहुत सारे घटनाओं हुई हैं ।

बहुत लोग समझते हैं कि मुझे कुछ हुआ ही नहीं। लेकिन किसी को भी होगा। इस उम्र में क्या घूमना है? थोड़ा आराम कर सकते हैं ना? ऐसे मेरे बच्चों कहते हैं। एक आदमी का सहारा लेकर घूमने को कहते हैं। वह लोग बोलते रहते हैं, लेकिन मैं अपना काम करता रहता हूँ। मेरा सोच यही है कि, जब तक यहां भूमि पर हमारा काम है, तब तक रहेंगे, नहीं तो कुछ ही मिनट में निकल जाएंगे। इसलिए कोई भी काम रुकना नहीं चाहिए, मेरे उद्देश्य यही है।

इस प्रकार बहुत सारे घटनाओं मेरे जीवन में हुए हैं। यह सब इस मार्ग में आने के बाद ही हुआ है। बहुत लोग पूछते हैं कि इस मार्ग में कुछ नहीं होता? तो यह सब क्या है?

सिर्फ मेरे को ही नहीं, मेरी मैडम को भी इस मार्ग में आने के बाद, शुरुआत में एक दुर्घटना हुई थी। इसको एक अग्नि संबंधित दुर्घटना हुई थी। इसको ठीक होने में 6 महीने लगी थी। यह विषय सबको मालूम है। बाद में अपने माई के यहां पश्चिम बंगाल गई थी। ट्रेन उतरते हुए.... प्लेटफार्म के और ट्रेन के बीच में गिर गई थी। उनके भाई लोग वही थे। अच्छा है कि उस दिन ट्रेन कुछ समय के लिए ज्यादा रुकी थी। मैडम को वहां से निकाल कर अपना घर लेकर गए थे। डॉक्टर को दिखाने से पता लगा कि रीढ में थोड़ा सा प्रॉब्लम हुआ है। ठीक होने में दो-तीन महीने लगेंगे, ऐसे बोले थे। लेकिन एक ही महीने में ठीक हो गई थी। तभी मेरे हार्ट स्ट्रोक का समाचार मिला था। मैडम तुरंत वहां से हैदराबाद पहुंच गई थी।

वही नहीं मैडम बहुत बार चल नहीं पा रही थी, बहुत बार बिस्तर पर ही रह गई थी। तब भी थोड़ा सा भी चलने पर ही क्लास को जाती थी। तब बच्चे आराम करने को भी बोलते थे फिर भी मैडम नहीं रुकी थी। मैडम का यही सोच है कि हम यहां आए हैं करने के लिए, तब तक करना ही है। मैडम का विश्वास क्या है? उतना बड़ा अग्नि संगठन मे से ज़िंदा आई हूँ, तब प्रकृति ने मुझे कुछ करवाने के लिए ही इस भूमि पर रखी है न ? इसलिए उस

काम को करना चाहिए।

वह कहती है कि बहुत लोगों को मुझे ज्ञान पहुंचाना है, तब मैं घर में कैसे बैठूंगा? उसकी यही विश्वास है। इसलिए वह काम बिना बैठ नहीं सकती है।

यह बात मैं क्यों बता रहा हूँ? क्योंकि कोई भी इस आध्यात्मिक मार्ग में आखिरी जन्मों में होने वाले को ऐसे कष्ट होते हैं। याद रखना है कि हम सब आखरी जन्मों में हैं। इसलिए कुछ परीक्षाएं होंगे, अवरोधों होंगे, कुछ समस्याएं होंगे, रुकावटें होंगे। साथ में जो भी आखरी जन्मों में है, किया हुआ कर्मों को इसी जन्म में खत्म करते हैं। इसलिए कष्टों ज्यादा ही होंगे।

अगर हम सोचेंगे कि यह कष्टों है, तब वह बढ़ेंगे। अगर सोचेंगे कि यह परीक्षाएं हैं, तब धैर्य से उनको सामने करेंगे। एक ही याद रखिए कि कोई भी कष्ट हो या बीमारी हो, शाश्वत केलिए नहीं है। अगर आप सहनशीलता में रहेंगे, कुछ दिनों बाद वह खुद-ब-खुद चले जाएंगे।

बहुत लोग मेरे पास आकर कहते हैं कि अपने परिवार वालों का या अपने बच्चों को समस्याओं हैं, कहकर दुख रहते हैं। लेकिन समझने की बात यही है कि हर किसी को अपना किया हुआ कर्मों को अनुभव करना पड़ता है और करेंगे भी। जिसको ज़्यादा ममकार होते हैं, वह रोते रहते हैं, और जिसका ममकार नहीं है, उन लोगों को जो आवश्यकता है, उनको सहायता करते हैं, और सेवा करते हैं। लेकिन रोते नहीं है। इसलिए गुरु ऐसे विषयों को बोध कर कर उनके आध्यात्मिक यात्रा को सुरक्षित मार्ग में चलाता है। साथ में आपको गम्य स्थान पहुंचने का समय भी कम करवाता है। ऐसे कहते हैं बाबा जी। मतलब अगर आपको 25 जन्मों तक लेने पड़ेगा? तब दस जन्मों में ही, गुरु आपका अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। अगर आप कुछ गलतियां ना कर कर, अपनी यात्रा करते हैं, तब आपका पूरे जन्मों कम हो जाएगा। यही नहीं, जो 50 जन्मों में सीखने वाले विषयों को इसी जन्म में सीखेंगे। तब आपको सीखने को क्या बचेगा? तब आगे जन्मों की क्या जरूरत है? इसलिए गुरु इस

प्रकार आपका समय कम कर सकता है। इसलिए गुरु का सहायता बहुत आवश्यक है, मेहर बाबा जी कहते हैं।

मेहर बाबा आगे कहते हैं कि, '**एक साधक स्वतंत्रता से अपना अन्वेषण द्वारा आध्यात्मिक मार्ग में बहुत दूर यात्रा कर सकता है, लेकिन बिना गुरु का सहायता, वह 6-वां भूमिका को पार करना नामुमकिन है' ।** इतना ही नहीं, '**मध्यांतर भूमिकाओं में भी फंस सकते हैं। लेकिन गुरु ऐसे फस ने नहीं देकर, आध्यात्मिक मार्ग में भरा हुआ उन पतन अवस्थाओं से और दुर्घटनाओं से एक साधक को बचाता है'।** इसलिए गुरु का सहायता साधकों को बहुत महत्वपूर्ण है, कहते हैं मेहर बाबा जी।

इसके बारे में कुछ गहराई में समझते हैं। एक साधक स्वतंत्रता होकर भी अपना आध्यात्मिक यात्रा कर सकते हैं बहुत दूर तक, मतलब किसी के सहारा बिना यात्रा कर सकता है लेकिन 6-वां भूमिका को पार करना नामुमकिन है। मतलब आध्यात्मिक यात्रा में आगे जाना बहुत मुश्किल है। इस संदर्भ में मैं अपना जीवन का घटना बताऊंगा।

मुझे पत्री जी से परिचय होने से पहले, भागवत गीता के श्लोक को पढ़ने में तीन-चार दिन लगते थे, लेकिन कुछ भी समझ नहीं आया था। तब मैंने मुझसे नहीं होगा कर कर छोड़ दिया।

लेकिन पत्री जी से परिचय के बाद, उसका बोध किया ध्यान करने के बाद, मैंने भागवत गीता के ऊपर दो किताबें लिखा था। तब गुरु का आवश्यकता का समझ आया था। और पत्री जी से परिचय से पहले मुझे कुछ नहीं आता था लेकिन अब मैं बहुत सारे विषयों बता सकता हूँ।

पत्री जी का परिचय से पहले मैंने कभी किताबें लिखा नहीं था। अब मैं 50 किताबें तक लिखा हूँ। इसी प्रकार हजारों वीडियो द्वारा संदेशों दिया हूँ। बहुत सारे ग्रामों में, शहरों में, प्रदेशों में, दूसरे देशों में भी, संदेशों दे चुका हूँ। यह सब पत्री जी के परिचय के बाद ही कर पाया हूँ।

इतना ही नहीं पत्री जी के परिचय के बाद कुछ सालों तक मैंने क्या-क्या सीखा हूँ, कि सोचा। सिर्फ सोचा ही नहीं, मैंने लिखना शुरु किया। आश्चर्य है कि उससे पहले मुझे बिल्कुल मालूम नहीं विषयों को, उससे जो सीखा हूँ, उन से सिर्फ आवाहन कर कर आचरण करने वाले विषयों को, और ऐसे बहुत सारे विषयों को मैंने लिखा था।

तब मुझे लगा कि अगर वह नहीं होते थे तब मेरा क्या हाल होता था? अगर इनका गाइडेंस नहीं मिला होता तो, मैं कितना अज्ञानता में रह जाता हूँ? समझ आया था।

उनसे मैं बहुत सारे विषयों जाना हूँ। जब उनके साथ यात्रा कर रहे थे, मुझे बहुत गालियां सुनने को मिला। गलतियों को उसने ठीक किया था। अगर वही नहीं होता तब ऐसी गलतियां करते रहते हुए होंगे। साथ में उनसे बहुत सारे टिप्पणियां और सूक्ष्म बातों को जाना है। वह सब अपने आप को आध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए, दुख से निकलने के लिए बहुत उपयोग हुआ है। वह सब के लिए जरूरी है।

इसलिए मेहर बाबा जी ने गुरु का सहायता की जरूरत बताया गया था। कोई भी अपने आप यात्रा कर सकते हैं लेकिन गुरु के सहायता बिना गलत रास्ते में जाने का संभवता ज़्यादा है। और उसका जीवन बेकार हो जाता है।

कुछ लोगों अपने लाभों के लिए, कष्टों के लिए, इच्छाओं को पूरा करने के लिए कई प्रकार के गुरुओं को आश्रय करते हैं। गुरुओं भी अपने हिसाब से ही मिलेंगे। ऐसे लोगों को ज्ञान प्राप्ति नहीं होगा, और आध्यात्मिक मार्ग में नहीं बढ़ेगा। उनका जीवन ऐसे ही समाप्त हो जाता है। लेकिन ज्ञान के लिए गुरु को आश्रय करने वाला लोग, ज्ञान पाते हैं और आध्यात्मिक मार्ग में बहुत आगे जाते हैं। कहीं भी रुकावटें ना होकर, अवरोधों नहीं होकर, आगे बढ़ते रहते हैं, ज्ञान को बहुत बढ़ा सकते हैं। कारण यही है कि सही गुरु का सहायता से ही है!

मेहर बाबा क्या कहते हैं?

'एक साधक अपनी स्वतंत्रता से ज्यादा दूर तक जा सकता है, लेकिन गुरु के सहायता बिना वह 6-वां भूमिका पार करना नामुमकिन है'।

यहां पर 6-वां भूमिका का मतलब क्या है? यह संदेह हमें आता है! अभी इनके बारे में जान लेते हैं।

पत्री जी ने हमें सप्त ज्ञान भूमिकाओं के बारे में बता चुके हैं। हमारी इस आध्यात्मिक यात्रा में मतलब आत्मा का यात्रा में मध्यांतर भूमिकाओं में भी फस जा सकते हैं, ऐसे बाबा ने कहा है।

लेकिन मेहर बाबा और आगे क्या कहते हैं? **'एक गुरु, साधक को ऐसे ना फसने देता है, और इन आध्यात्मिक यात्रा में रुकावटों से, और दुर्घटनाओं से साधक को बचाता है'।** कारण यही है कि उस मार्ग में क्या-क्या दुर्घटनाएं है? और क्या-क्या रुकावटें हैं? वह गुरु को अच्छी तरह से मालूम है..... इसलिए उनसे वह एक साधक को बचा सकता है।

इसलिए कहा गया है कि गुरु का सहायता बहुत ही महत्वपूर्ण है।

इस आध्यात्मिक मार्ग में मतलब ज्ञान के मार्ग बहुत आसान नहीं है, एक प्रकार कांटों का रास्ता है। इस मार्ग में यात्रा करना सामान्य बात नहीं है। इसलिए इस मार्ग में कितने लोग रह पा रहे हैं? कितने लोग आगे जा पा रहे हैं?

इसलिए कहीं ना कहीं एक रुकावट आता ही रहता है। संसार में, या परिवार में मतलब पति-पत्नी के बीच, या आर्थिक रूप में, या शारीरिक रूप में, अवरोधों या रुकावटें आते रहते हैं। इसलिए आध्यात्मिक मार्ग में आगे जाना बहुत कठिन है। ऐसी परिस्थितियों से सिर्फ गुरु ही बचा सकता है।

'ध्यान से ही ज्ञान' हमें पत्री जी बताया है। केवल घंटों तक सुबह ध्यान में बैठने से ज्ञान मिलेगा क्या? नहीं ना?

बहुत लोगों ध्यान क्यों कर रहे हैं, उनको मालूम नहीं है। ऐसे कई सालों से करने वालों से...... पूछने से, भाई साहब आप बहुत सालों से ध्यान कर रहे हो ना? आपको ज्ञान कुछ बड़ा है क्या? असलियत में ज्ञान क्या है? अगर ज्ञान बढ़ाने से आपका व्यवहार कैसे होना चाहिए? ऐसे प्रश्नों पूछने से उनका चेहरा भावहीन हो जाता है।

आजकल गुडाकेश करकर रात भर जगा कर बैठ्ते हैं। लेकिन सोचिए? गुडाकेश होने वाले अर्जुन ने भी युद्ध के प्रारंभ में दुखित होकर, शस्त्रों को छोड़कर, श्री कृष्ण जी के पैर पड़ गए थे ना? अगर गुडाकेश अर्जुन इस तरह रोते हुए हैं, मतलब उसका दुख निवारण नहीं हुआ है ना?

क्योंकि ? गुडाकेश होने वाले अर्जुन अज्ञानी है, और श्री कृष्णा जी ब्र्म्ह ज्ञानी है। मतलब समझ सकते हैं कि, ज्ञानी हुए श्री कृष्ण जी ही महान है।

इतना ही नहीं, जितना भी श्री कृष्ण ने गीता बोध किया है, युद्ध के मध्य में जब अभिमन्यु मर जाता है तब गुडाकेश रोता रहता है। तब फिर से ज्ञानी हुए श्री कृष्ण जी उनको सांत्वना देना पड़ा। इससे हम समझ सकते हैं कि गुडाकेश से ज्यादा, ज्ञानी ही महान है।

साथ-साथ श्री कृष्ण जी ने गुडाकेश अर्जुन को योगी बनने को बोध करता है। क्योंकि सबसे महान योगी होता है। मतलब गुडाकेश से योगी महान है।

इसलिए याद रखिए सिर्फ ध्यान करने से काफी नहीं है, रात भर जागने से भी काफी नहीं है।

देखिए अगर पौधे को बढ़ाना है तो सब चीज होना चाहिए। जल होना, निराई करना, मतलब मलबा नहीं होना चाहिए, उनके हिसाब में थोड़ा दवाई डालना चाहिए, खाद डालना है और धूप भी रहना चाहिए। यह सब समान मात्रा में होना चाहिए, तभी पौधा अच्छी तरह से बढ़ेगा। एक ही चीज़ होने

से नहीं चलेगा। इसी तरह ज्ञान को बढ़ाना है तो हर विषय की जरूरत है, केवल एक ही ध्यान से फायदा नहीं है।

इसलिए आध्यात्मिक मार्ग एक फूल भरी रास्ता नहीं है। इसलिए इस ध्यान के, और ज्ञान के बीच में, बहुत सारे विषयों है! बहुत रूकावटों आते हैं! बहुत परीक्षा होंगे! बहुत अवरोधों होंगे! हमें इन सबको पार करना है! जानना है। अगर सोचेंगे तो बहुत कठिन लगता है। क्योंकि अगर नहीं है तो, हर एक ब्र्म्ह ज्ञानी हो जाएगा ना?

इसलिए अगर एक श्री कृष्ण बनना है तो इतना आसान है क्या? एक बुद्धा बनना है तो इतना आसान है क्या? एक जीसस बनना है तो इतना आसान है क्या? कितना कठोर दीक्षा होना चाहिए? कितना कष्ट करना है?

इस आध्यात्मिक मार्ग में चलने वाले को प्रकृति परीक्षाओं देती रहती है। क्योंकि बढ़ाना मतलब एक देवता बनना का प्रयत्न करना। मतलब एक मनुष्य को माधव बनना है। वह इतना मामूली विषय नहीं है।

उस प्रयत्न करते समय किसी को भी कुछ शक्तियां, सिद्धियां मिलते रहते हैं। तब उनमें अहंकार बढ़ जाता है। उनका उपयोग कर कर लोगों को धोखा देना, गर्व महसूस करना, अपने शक्तियों से दूसरों को वश करना, अपने को महान बनने का प्रयत्न करना, आदि करते रहते हैं। इस वक्त उनका पतन शुरू हो जाता है।

देखिए तीसरी आंख या सूक्ष्म शरीर यान, पिछले जन्म देखना, यह सब उनके लिए परीक्षाएं हैं। प्रकृति में साधना करते वक्त उनको यह सब परीक्षाएं होते रहते हैं। जब वह आते हैं बुद्धिमान लोग इन शक्तियों को अपना ज्ञान बढ़ाने को उपयोग करते हैं। बल्कि अपना महत्व को प्रदर्शन के लिए उपयोग नहीं करते हैं। अगर ऐसे करेगा ना केवल वापस ले भी लेंगे उसका पतन भी शुरू हो जाता है।

याद रखिए अगर आपको ऐसी शक्तियां या सिद्धियां पाते हैं, किसी भी

हालत में किसी को बताना नहीं, और वैसे रहो कि आपको कुछ मिला नहीं है। यह सब प्रारंभ स्थिति में आने वाले विषयों हैं, आप उसको पराकाष्ठ समझते हैं। आप समझते होंगे कि आप बहुत उच्च स्थिति पहुंच गए हैं। ऐसे एक छोटी शक्ति मिलने से, या एक पिछले जन्म को देखने से, या कुछ मालूम होने से आप बहुत महान नहीं हो गया है ।

आपको कुछ दिख गए हैं, थोड़ा सा तीसरी आंख खुलने से क्यों डींग मारना है? तो कुछ लोगों को आगे होने वाले विषयों जानते होंगे, और जो होना है वह तो हो ही जाएगा। अगर यह बात बताया तब शक्ति खो जाएगा।

और कभी दूसरों के भावों को देख सकते हो। लेकिन आपको दिखाना नहीं है कि आपको मालूम हुआ है। अगर सुना भी, नहीं सुनने की तरह रहना है। यही बात मैंने पत्री जी करीब से देखा हूँ।

कुछ लोग जब ज्यादा शक्तियां आते हैं और दूसरों के रोगों को ठीक करते हैं। यह भी गलत है। जब गुरु का सहायता नहीं रहेगा ऐसे विषयों पर पतन हो जाते हैं।

क्योंकि? ऐसी शक्तियां आना, ऐसे अनुभवों आना, ऐसे सिद्धियां पाना मामूली बात नहीं है। बहुत सालों का कृषि से, बहुत जन्मों का कृषि से, उस स्थिति तक पहुंचते हैं। बाद में अगर उनको कैसे उपयोग करना नहीं मालूम है, और प्रदर्शन करते हैं, तब वह पतन हो जाएंगे और बहुत जन्मों पीछे चले जाते हैं। इतने सालों का साधना बेकार हो जाता है। मैं यही बात कहता रहता हूँ। साधना करना महान नहीं है, लेकिन साधना द्वारा प्राप्त किया हुआ शक्तियों को नहीं खोना, यह महान है।

वैसे ही इन सबको पार कर कर ऊपर जाते वक्त तीन तरह के परीक्षे होते हैं।

1.कीर्ती।, 2.कान्ता।, 3. कनकम।

1.कीर्ती :- कीर्ती मतलब नाम कमाना। उसको अवार्ड या रिवॉर्ड आते हैं, नहीं

तो सब लोग उन्हें प्रशंसा करते हैं। और उनके पास थोड़ा सा भी ज्ञान बढ़ाने पर उनका फूल माला चढ़ाते हैं और उन्हें उपाधि भी दे देते हैं। उनका माला पहनाकर आसमान पर चढ़ाते हैं। अगर यह देखकर उनमें अहंकार बढ़ गई, तब वह तुरंत गिर पड़ेगा, उसका खेल खत्म हो जाएगा।

2.कान्ताः- जब पुरुषों को आध्यात्मिक शक्तियां बढ़ते हैं, उनके पास स्त्रियों इकट्ठे हो जाते हैं, उसके ऊपर गिर पड़ते हैं। अगर थोड़ा सा भी कमज़ोरी हो गया तब वह गिर जाएगा। अगर वही स्त्री है, तब पुरुष लोग उनके पीछे पड़ जाते हैं। उसमें भी अगर थोड़ी सी कमज़ोरी हो तो, वह भी गिर जाते हैं।

3.कनकमः- कनकम, मतलब पैसे। यह कमज़ोरी बहुत लोगों में है। आध्यात्मिक मार्ग में अगर देखेंगे, तब कुछ दिन के लिए बहुत श्रद्धा पूर्वक रहते हैं, थोड़ी शक्ति प्राप्त करते हैं। तब से वह लोग अपना आर्थिक स्थिति को बढ़ाने को कोशिश करते हैं, उसी को महान मानते हैं। इस तरह उनका पतन होना शुरू होता है। तब ऐसी स्थिति में, हमें रक्षा करने वाला सद्गुरु ही है।

सिर्फ ध्यान करना ही प्रधान नहीं है। कितने सारे नियमों पालन करना चाहिए? जब आप आगे बढ़ते रहते हो, कितने समस्याओं और परीक्षाओं को सामना करना पड़ता है? साथ में परिवार में समस्याओं, झगड़ा और सहायता नहीं होना, ऐसे कितने होंगे? इसलिए जितने भी आएंगे अगर हम अपनी जिद्दी से साधना नहीं छोड़ेंगे, तब अगला जन्म बहुत सहानुकूल होगा और आसानी से अपना लक्ष्य को पा सकते हैं।

इसलिए मेहर बाबा जी ने कहा है, कि '**आध्यात्मिक मार्ग में न केवल एक ही भूमिका में, सारे भूमिकाओं में भी उसे पतन अवस्थाओं से रक्षा करने वाला गुरु ही है**'।

एक साधक को इस आध्यात्मिक मार्ग में ज्ञान पाने को, और उस ज्ञान मार्ग में अगर जल्दी अपना गम्य स्थान पहुंचना है तो, गुरु का सहायता जरूरी है, ऐसे कहते हैं मेहर बाबा जी। उसने और क्या कहा है? कि '**गुरु हमारा**

आध्यात्मिक यात्रा को निर्दिष्ट और सुरक्षित बनाता है।' इतना ही नहीं, 'हम अपना गम्यस्थान पहुंचने के लिए समय भी बहुत घटाने में गुरु का सहायता काम आता है'।

यहां पर समय मतलब एक या दो घंटे, या दिन या साल नहीं, बहुत सारे जन्मों को कम कर सकते हो। गुरु का सहायता उतना महान है। साधक को स्वतंत्र होकर प्रयत्न कर सकते हैं। स्वयं ध्यान कर सकते हैं, कुछ किताबों भी पढ़ सकते हैं लेकिन बिना गुरु का सहायता 6-वां भूमिका को पार करना नामुमकिन है, कहते हैं मेहर बाबा जी।

साथ में, **'एक साधक को मध्य भूमिकाओं में न फंसने से, आध्यात्मिक मार्ग में रुकावटों या दुर्घटनाओं से, या पतन अवस्थाओं से, गुरु रक्षा करता है'।** इसलिए गुरु का सहायता बहुत ही महत्वपूर्ण है, कहते हैं मेहर बाबा जी।

और आगे कहते हैं कि, इस आध्यात्मिक मार्ग में तीन दशाओं है। और कबीर महाशय ने उनको अग्नि के तीन दशाओं से तुलना किया है। सबसे पहले दशा में सिर्फ धुआं रहता है। बाद में धुआं से ढका हुआ अग्नि होता है। आखिर में बिना धुआं, सिर्फ अग्नि रहता है।

मतलब इस ज्ञान को अग्नि में तीन दशाओं से तुलना किया है।

वैसे ही आध्यात्मिक मार्ग में प्रारंभ दशा में बहुत जबरदस्त अज्ञानता में रहते हैं। कोई भी इस मार्ग में प्रवेश करने वाले, मतलब अज्ञानता से निकल कर, इस ज्ञान मार्ग में जब आते है, वह बहुत ही जबरदस्त अज्ञानता में रहता है।

बीच में क्या होता है, मतलब गम्यस्थान के बारे में घबराहट के साथ वाले दर्शन होता है। मतलब वहां पर थोड़ा ज्ञान प्राप्त होता है, और थोड़ा अज्ञानता बाकी है, गम्यस्थान के बारे में थोड़ा आशक्ति दिखाता है। आखिरी दशा में ज़रा सा भी भ्रांति न रहकर, सत्य का साक्षात्कार ही होगा। मतलब पूर्ण ज्ञानी बनता है।

बीच में थोड़ा सा अज्ञानता और थोड़ा सा ज्ञान का मिलावट होता है, अंत में अज्ञानता पूरा निकालकर, पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। उस सत्य का साक्षात्कार प्राप्त होता है, यह जानना है। इस मार्ग में अनेक प्रकार के भ्रांतियां और भ्रम होते हैं। एक या दो नहीं हजारों प्रकार के भ्रांतियां होते हैं। इसलिए जानना चाहिए कि उस रास्ते में कठिनाइयों और हर दशा मालूम होने वाला, गुरु का सहायता बिना, और मार्गदर्शन के बिना, एक साधक कभी सुरक्षित होकर गम्य स्थान नहीं पहुंच पाएगा ।

अगर अभी हम देखेंगे तो इस ज्ञान मार्ग में बहुत सारे लोग भ्रमों और भ्रांतियां में फंस गए हैं। यह लोग कुछ किताबें पढ़कर, आपको कहते हैं कि यह आ जाएगा, वह आ जाएगा, आप को सोचने पर हो जाता है, आप को बुलाने पर कोई भी आ जाता है, शिर्डी बाबा भी, बाबा जी भी, शिवजी, विष्णु जी, कोई भी आ जाता है। आप जो भी सोचेंगे वह हो जाता है। आपके सर के ऊपर सोने का पिरामिड बन जाने को कहने पर बन जाता है, अगर आप आर्थिक कठिनाइयों में हो, अगर आप कहेंगे कि आपको करोड़ों रूपए आ जाएंगे। अगर आपको संतान या बच्चों नहीं है, सिर्फ आपके कहने पर आपके बच्चे हो जाएंगे। ऐसे आजकल सब लोग भ्रमों में और भ्रांतियां में फंस रहे हैं।

लेकिन ऐसे भ्रांतियां में और भ्रमों में नहीं पढ़ने को, आपको उससे आपका समय और जीवन बेकार नहीं करने को, निर्भय और बिना शर्मा कर, बताने वाले एक सद्गुरु ही है ।

हमारे समिति में, पीएसएम में 80 से 90% इसी जगह फंस चुके हैं। इस ध्यान मार्ग में और ज्ञान मार्ग में आकर भी ध्यान क्या है, नहीं समझ कर, जो भी कुछ बोलता है, उसको अनुकरण कर रहे हैं। आने का कारण एक है, और वह अनुकरण करते अलग। तब उनका किया हुआ पूरा साधना और कष्ट बेकार हो जाता है। इसलिए मेहर बाबा जी कहते हैं कि इस मार्ग में अनेक भ्रांतियां होते हैं।

असलियत में इस ज्ञान मानव लक्ष्य मोक्ष पाने के लिए ही है। लेकिन सब लोग इस लक्ष्य को भूलकर अब इन भ्रांतियां में फस जा रहे हैं। कुछ लोग अपने आप को देवता समझ रहे हैं, लेकिन कुछ दिनों बाद उनका भंडार फूट जाता है।

एक या दो लोगों को ठीक होने से क्या यह देवता बन जाता है क्या ? उस भ्रांति में रहने वालों को वह कुछ भी कर सकता है। एक प्लेट में अन्न रखकर मुंह में खिला सकता है, और बाद में चुम्मा भी दे सकता है। भोले भाले लोग वह सब खुश किस्मत समझते हैं। साथ में उसको नीचे लोट पलोट कर कर गाने लगाकर नचा भी सकता है। उन भ्रांतियां में रहने वाले कुछ भी कर बैठते हैं।

अगर ऐसे फस जाते हैं वह अपनी पूरी जन्म को बेकार करते हैं। लेकिन ऐसे नहीं फस कर, अगर इस ज्ञान के लिए प्रयत्न करेंगे तब आगे बढ़ते हैं, और 10 जन्मों में प्राप्त करने वाले उन्नति, इसी एक ही जन्म में प्राप्त कर सकते हैं। अगर और दीक्षा से करने पर 50 जन्मों तक का उन्नति भी मिल सकता है। इस तरह का नष्ट निवारण करने वाला सद्‌गुरु का सहायता ही है। कारण यही है कि उस गुरु को इस मार्ग में सारे दशाओं की जानकारी है। ऐसे गुरु का सहायता बिना, हम कभी गम्यस्थान नहीं पहुंचेंगे, कहते हैं मेहर बाबा जी।

इसलिए हम इन दशाओं के बारे में जानते हैं। इन्हीं दशाओं को भूमिकाओं कहते हैं। योगी लोग और महान लोग उनका साथ प्रकार के कहते हैं। उसी को सप्त ज्ञान भूमिकाओं कहते हैं। अगर उन्हें हम जानेंगे तब हमें मालूम होगा हम किस भूमिका में है? किस भूमिका पहुंचना है? उसके लिए क्या करना चाहिए? यह सब हम जान सकते हैं। उन भूमिकाओं के बारे में पत्री जी भी हमें कह चुके हैं।

महान महान लोगों के बातों से हमें जो भी जरूरत है, पत्री जी बता चुके हैं। अगर आप एक स्थाई तक पहुंचेंगे, तब आपको कोई भी कहने की जरूरत

नहीं है, आप ही सब जान लेंगे, और सबको बोध करेंगे। एक साधक, बोधक बन जाता है और बनना चाहिए।

लेकिन जो भी असली सद्‌गुरु को पकड़ता है वह भाग्यशाली है। असली गुरु थोड़ा कठिन ही होता है। उनको शिष्यों से कुछ पाने का जरूरत नहीं होता है। उनका क्या काम है? जैसे उसने उन्नति प्राप्त किया है सब वैसे ही बनने का आकांक्षा है। वह जो भी करते हैं, और करवाते हैं सिर्फ लोक कल्याण के लिए ही करवाते हैं। पत्री जी भी ऐसे करवाते थे। जो भी कुछ देते थे वह नहीं लेते थे। और तुरंत उसे लोक कल्याण काम के लिए खर्च करवाते थे। इसलिए वह इस स्थाई तक पहुंच गए हैं।

सदगुरु का एक ही आकांक्षा होता है, यह है कि, अपनी तरह कुछ लोगों को तैयार करना और इस लोक में अज्ञानता को निकालना चाहते हैं। याद रखिए अभी पूरा लोक पूरी तरह से अज्ञानता में ही है, असत्य में ही है। इसलिए सब लोग इतना दुख में है। ऐसे लोगों को सत्य मार्ग में, इस धर्म मार्ग में, ज्ञान मार्ग में लाना चाहिए। वही सदगुरु का आकांक्षा है। पत्री जी भी सबको सत्य मार्ग में लाने को प्रयत्न किया है।

इसलिए हम सबको चाहिए ज्ञान, हमारा लक्ष्य है पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना, पूर्णात्मा बनना, सत्य लोक पहुंचना ही हमारा महत्वाकांक्षा है। इसके लिए थोड़ा कष्ट करना है। इसके लिए सद्‌गुरु का सांगत्य बहुत जरूरी है। गलत रास्ते में जाने वालों को सद्‌गुरु का सांगत्य बहुत उपयोग होता है।

श्री शंकराचार्य जी भी कहते हैं ना? 'त्रिजगति सज्जन संगति रेखा, भवति भावर्जुन तरणे नौका' करके ।

मतलब तीनों लोकों में भी सज्जन सांगत्य मतलब जो सत्य के बारे में बता सकते हैं, उनका सांगत्य की बहुत ही जरूरी है। असलियत में सत्यम ही है, अगर किसी को मिल गया उनसे बड़ा खुश किस्मत वाला कोई नहीं है।

इसलिए भ्रमों में और भ्रांतियां में नहीं पढ़ना है, गलत रास्ते में नहीं

जाना है, और माया में नहीं फंसना चाहिए। इस ज्ञान मार्ग में कई प्रकार के रूकावटों, अवरोधों, परीक्षाओं होंगे, पहले ही कह चुके हैं न ? मुख्यतः कीर्ति, कांता, कनकम , वैसे में नहीं फंसना चाहिए ।

अपना दृष्टि सिर्फ लक्ष्य पर ही होना चाहिए। तब क्यों नहीं पाएंगे? बिल्कुल प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए हम बहुत महीनों से बहुत कुछ सीख रहे हैं, बहुत साधना कर रहे हैं, किताबें पढ़ रहे हैं, उस लोक कल्याण सेवाओं में भाग ले रहे हैं। अगर हम किस स्थाई पर हैं जानना है तो ? पत्री जी का कहने वाले सप्त ज्ञान भूमिकाओं में, किस भूमिका में है? किस स्थिति में है? कौन सा स्थाई पर है? को जानना चाहिए। तब आगे भूमिकाओं में जाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

इस साधना में आप खुद स्वतंत्रता से साधना कर सकते हो। बहुत लोग कहते हैं कि मैं सुबह उठकर दो या ढाई घंटे ध्यान कर रहा हूँ, शाम को 2 घंटे का ध्यान कर रहा हूँ। वह ऐसे कर सकते हैं लेकिन वह कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाएंगे। कितना भी दिन करेंगे वैसे ही रहेंगे। इस साधना से उनको प्रशांतता मिलेगा, थोड़ा शक्ति पा सकते हैं, खुशी-खुशी में अपना काम कर सकते हैं, पूरा दिन सही रहेगा, वहां तक ही सीमित रहेंगे। इसके आगे उनका आध्यात्मिकता में और आत्मा का कोई उन्नति नहीं होता है।

उन लोगों को भौतिक रूप में ठीक रहता है। वह कहते हैं कि जब से ध्यान कर रहे हैं हमें सब ठीक है, हमारा सहत ठीक है, उसके अलावा और क्या चाहिए। अगर वह देह ही है तो यह बात सही है..... लेकिन वह लोग आत्माएं हैं। बहुत लोगों को यह विषय मालूम नहीं है। अगर यह विषय जानते हैं तब गुरु का आवश्यकता समझ आता है।

अगर देह ही है तब सुबह और शाम कुछ देर के लिए ध्यान काफी है। अगर आत्मा है तब उन्हें ध्यान काफी नहीं है, ज्ञान भी चाहिए।

तब वह इस ज्ञान पाने के लिए गुरु का आवश्यकता होता है। हमें

शिरडी बाबा भी अपने संदेशों में कहा था, गुरु की आवश्यकता के बारे में। मेहर बाबा जी भी कहा था कि गुरु का सहायता बहुत आवश्यक है।

देखिए गुडाकेश अर्जुन भी, जब तक श्री कृष्ण ने बोध नहीं किया, उसे ज्ञान नहीं मिला और रोते हुए बैठ गए थे।

इसी प्रकार श्री कृष्ण जी का भी गुरु है सांदीप महर्षि और श्री रामचंद्र प्रभु का भी गुरु श्री वशिष्ठ महर्षि था। अगर उन जैसे महान पुरुषों को गुरुओं का आवश्यकता हुआ है...... सोचिए ? हमें गुरु का आवश्यकता नहीं है क्या? बिना गुरु कैसे उन्नति प्राप्त करेंगे? कैसे ज्ञान प्राप्त करेंगे? इसलिए ऐसे ज्ञान होने वाले गुरु का आवश्यकता जरूर है ।

अगर अपने बारे में कहूँ तो, जब तक पत्री जी का परिचय, 20 साल पहले, नहीं हुआ, मेरा जीवन ऐसे कुछ कमाना, संसार में सुख रहना, धन संपत्ति इकट्ठा करना, यही जीवन समझता था। सब कुछ ठीक था लेकिन पत्री जी के परिचय के बाद मुझे समझ आया है कि मैं शरीर या देह नहीं हूँ। मैं आत्मा हूँ। उसने जब यह बात बताया मुझे आश्चर्य हुआ। क्योंकि तब तक मैं देह ही समझ रहा था।

और सिर्फ देह को ही प्राथमिकता दिया था। लेकिन पत्री जी ने कहा है कि मैं आत्मा हूँ।

इससे पहले कई गुरुओं से मिला था लेकिन कहीं भी, कोई भी आत्मा के बारे में नहीं बताया है। लेकिन पत्री जी के द्वारा मुझे मालूम पड़ा।

तब मैंने सोचा था कि अगर मैं आत्मा हूँ, इतने सारे करोड़ों को कमाया...... इन करोड़ों मेरी आत्मा को कैसे उपयोग होगा? मतलब 50 सालों में जो कुछ कमाया यह सब बेकार है न ? जब सोचा था वह सही लगा। तब सोचने लगा कि अगर मैं आत्मा हूँ तब मुझे क्या करना चाहिए? तभी समझ आया था कि अगर मुझे लाभ होना है तब मुझे ज्ञान पाना चाहिए। तब से मेरा पूरा जीवन ही बदल गया है। एक प्रकार उल्टा हो गया है।

तब सारे व्यापारों को छोड़कर, ज्ञान कमाने शुरू किया हूँ। केवल पत्री जी के सहारे से मैं इस मार्ग में आया हूँ। नहीं तो बहुत कुछ सेवाएं करता रहा, जिसे कुछ फायदा नहीं होने वाला था, पत्री जी के परिचय के बाद जाना हूँ। अगर आत्मा को लाभ पहुंचाना है तो आत्म सेवाएं मतलब मुक्ति कर्मों करना चाहिए, मुझे यह समझ आया है।

इस प्रकार उनके मार्गदर्शन में बहुत कुछ सीखा हूँ। तब तक मैं समझता था कि वेंकटेश्वर स्वामी सिर्फ तिरुमला में ही रहता है तभी मैं हर साल वहां जाता था। पत्री जी के परिचय के बाद मुझे समझ आया है कि, हर एक के अंदर वेंकटेश्वर स्वामी, आत्मा के रूप में रहता है। ऐसे बहुत सारे विषयों को मैंने जाना।

साथ में हमें क्या-क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? यह भी जाना है।

मुख्यतः मानव को चाहिए बुद्धि और ज्ञान। वह कैसे प्राप्त करना है पत्री जी द्वारा सीखा हूँ।

अगर गुरु जी नहीं होता तब कैसे मालूम होगा? जब तक मुझे पत्री जी का परिचय हुआ मुझे 53 साल हो चुके थे। 30, 40 साल बाद जीवन खत्म हो जाता है। तब क्या फायदा? इसलिए याद रखिए जो कोई सत्य को आश्रय करता है! धर्म को आचरण में लाता है! उनका जीवन अद्भुत रहता है।

इसलिए वेदों में कहा है 'सत्यम वदा - धर्म चरा' । और अगर ज्ञान प्राप्त करना है तो आध्यात्मिक त्रिरत्नों को आचरण में लाना है। मतलब साधना, स्वाध्याय और सज्जन सांगत्य निरंतर करना चाहिए। मतलब जरूर 'श्वास पर ध्यास' ध्यान करते हुए, शाकाहार सात्विक भोजन ही खाना है। और ज्ञानी लोगों का पुस्तकों पढ़ना चाहिए, आत्मज्ञान संबंधित संदेशों को सुनना .....यह तीनों को आध्यात्मिक त्रिरत्नों कहते हैं। यह काम करने से ज्ञान ऑटोमेटिक ही धीरे-धीरे आएगा। ऐसे लोगों को योगी कहते हैं। इसलिए जो

कोई सत्य को आश्रय करता है! धर्म को आचरण में लाता है! थोड़ा कष्ट करता है! तब कुछ ना कुछ ज्ञान प्राप्त करते हैं।

अगर ऐसे करते-करते शरीर छोड़ भी दिया तब क्या होगा, भगवत गीता में अध्याय 6 और श्लोक 41 और 42 में कहा गया है।

श्लोक : प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ।। **(भ.गी.6-41)**
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम ।। **(भ.गी.6-42)**

तात्पर्य :- ऐसे 'योग भ्रष्ट' (मतलब जो योग साधना पूरा नहीं करते हैं मध्य में शरीर छोड़ने वाले) मरने के बाद पुण्य आत्मा लोकों में जाकर, वहां कई सालों तक रहकर, बाद में परिशुद्ध श्रीमान लोगों के परिवार में जन्म लेते हैं। नहीं तो ज्ञानी लोगों के, योगी के वंश में जन्म लेते हैं। ऐसे जन्म मिलना ही दुर्लभ है।

यह विषय मैं बता रहा हूँ क्योंकि जो भी इस मार्ग में आए हैं वह और ज्यादा कष्ट करेंगे।

देखिए अगर आप पुण्य आत्मा लोकों में जाकर वहां का सांगत्य, और पापों के लोक में जाकर वहां का सांगत्य, कितना फर्क होता है ?

पुण्य आत्माओं का सांगत्य सिर्फ जो सत्य को आश्रय करता है, धर्म आचरण करते हैं, श्रद्धा पूर्वक कष्ट करते हैं! उन्हीं को मिलता है।

वह लोग पिछले जन्मों में कैसे भी हो सकता है। धन कमी से पीड़ित हो, परिवार में झगड़े होते होंगे, पति और पत्नी गुज़र गए होंगे, या बच्चों ना पैदा होने से, या ऐसे कई प्रकार के मुश्किलें होकर भी, सत्य को आश्रय करते रहना। मतलब हर रोज़ 'श्वास पर ध्यास' रखकर ध्यान करना चाहिए।

सत्य का मतलब सृष्टि का मूल, परम ब्र्म्ह है। उतना महान को आश्रय

करना। अगर यह बात समझेंगे कभी आप ध्यान करना छोड़ेंगे नहीं। क्योंकि जब सत्य को आश्रय करेंगे, तब आपको धर्म मालूम होगा। क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, आपको अंदर से ही मालूम होगा, तब आप धर्म को आचरण कर सकते हैं। तब आपको अंतरात्मा प्रभोद अच्छी तरह समझेंगे।

आप अपने कर्मों के कमियों को और धर्म को खुद अपनी अंतरात्मा ही दिशा करेगा। तब आपका प्रवर्तन सही होगा। अगर वह जैसे कहेंगे आप करेंगे, तब आप ज्ञान प्राप्त कर सकते हो। ऐसे ज्ञान को थोड़ा सा भी पाने पर आप भाग्यशाली हैं। श्री कृष्ण जी कहते हैं कि इस प्रयत्न में अगर शरीर छोड़ देते हैं, वह पुण्यात्माओं के लोक में पहुंचते हैं। वहां जाना ही नहीं, और कितने लाभों मिलेगा? तब बाद में भूमि पर अगर जन्म लेना है, श्रीमान लोगों के घर में जन्म लेंगे, या महान योगी लोगों के घर में जन्म लेते हैं।

अभी अम्मा और मैं, दोनों संपन्न परिवार में जन्म लिए हैं। वैसे ही मंगलगिरी में शिवा और सौजन्य के बेटे, हर्ष और ज्ञानेश, दोनों बहुत ही कम उम्र में इस ध्यान मार्ग में और ज्ञान मार्ग में इतना श्रद्धा रखते हैं, मतलब उनका परिवार पूरा योगियों का ही है। मतलब ध्यान करने वाले हैं। ऐसे परिवार में जन्म लिए हैं।

इसलिए जैसे श्री कृष्ण जी ने कहा है, हम दोनों संपन्न परिवार में, और वह दोनों योगियों के परिवार में जन्म लिए हैं। ऐसे लोग अपना साधना को पूरा कर कर मोक्ष पाते हैं, श्री कृष्ण जी ने कहा है। उसने और क्या कहा है? कि ऐसे जन्म मिलना इस संसार में महा दुर्लभ है।

इसलिए कोई भी योगी जैसे ध्यान कर कर ज्ञान प्राप्त करेंगे तब ऐसे जन्म लेने का अवसर मिलेगा।

श्री कृष्ण जी एक और बात कहा है।

श्लोक : अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम ।। **(भ.गी.9-22)**

तात्पर्य :- जो कोई चिंता न रहकर सिर्फ मुझे मतलब आत्मा में विश्वास रखकर, मुझे (आत्मा) ध्यान करते हैं, हर वक्त मेरे (आत्मा) ऊपर निष्ठा रखने वालों का योग और क्षेम, को मैं ही देखूंगा। आपके बहुत कुछ होंगे। वह सब छोड़कर सिर्फ मेरे ऊपर मतलब आत्मा के ऊपर दृष्टि रखना है।

इसलिए मैं आप सभी लोगों को, कहता हूँ कि आप जिसके लिए चिंतित हैं, वह छोड़कर ध्यान करने से आपका एक-एक चिंता, जैसे हवा में मेघों निकल जाते हैं, वैसे निकल जाएंगे। मगर बिना कुछ कर कर, अपने अंदर श्रद्धा न रहने पर, आलसी रहकर, निर्लक्ष्य रहने से, प्रकृति आपको कैसे सहायता करेगी? बताइए। याद रखिए आपका जीवन स्वर्ग या नर्क में बदलने का खुद ही जवाबदारी है, कोई दूसरा नहीं है। यह जानना है।

20 साल पहले मुझे बहुत व्यापारों होते थे, सब कुछ छोड़ दिया, पदों को छोड़ा, राजनीति भी छोड़ा, बच्चों को छोड़ा, सिर्फ इस मार्ग को पकड़ा हूँ। मुझे सब लोग पागल समझते थे। कितना बड़ा व्यापार था? वह राइस मिल को बंद कर दिया, वह कोई गुरु को पकड़ा, कितना मूर्ख है करके सब लोग मुझे समझते थे।

कुछ समय बाद सबको अपने-अपने व्यापार में मुश्किलों बढ़ने लगा, नष्ट हुए, परिवार में समस्याओं, आरोग्य समस्याओं, ऐसे एक-एक को अलग-अलग समस्याओं आए थे। तब वह लोग समझते थे कि हमसे बड़ा, राघव राव जी ही, समझदार है।

इसलिए हमें जब भी खाली समय मिलता है, हम सब सत्य भगवान के ऊपर मतलब आत्मा के ऊपर दृष्टि रखना चाहिए। आत्मा संबंधित ज्ञान को अभ्यास कर रहे हैं, उसी को सबको बोध कर रहे हैं। हमें और कुछ नहीं है। मेरा जीवन ऐसे बदल गया है, मेरी मेडम का जीवन भी बदल गया है।

पहले हमें जितना भी संपत्ति हो, कहीं ना कहीं अशांति रहती थी। अभी वह कुछ नहीं है, कोई कमी नहीं है। ऐसे बदलने का कारण ? सिर्फ सत्य को

आश्रय करना ही है! सत्य ज्ञान सबको बोध करना ही!

वही मैं आप लोगों का बार-बार कहता हूँ। दिन में 3 घंटे आत्मा के लिए समर्पण करो। ज़ूम क्लास में भाग लो, बाद में 20 घंटे शरीर के लिए करो। इसी तीन घंटा में सारे काम करना है क्या? क्या आपको बाकी 20 घंटे काफी नहीं है? मुझे मालूम है कि 'जितने करोगे, उतना ही महादेव'। इसलिए याद रखिए हम कितना महान मार्ग में आए हैं।

पहले आप लोगों को एक विषय जानना चाहिए। इस दुनिया में करोड़ों लोगों में से न केवल इस ज्ञान मार्ग में आना, इस ज्ञान मार्ग में आकर ज्ञान प्राप्त करने को आशक्ति दिखाना, वह लोग बहुत ही भाग्यशाली हैं।

बहुत लोग ध्यान में आए हैं, लेकिन उनको ज्ञान पर आशक्ति नहीं है, कोई रोग ठीक करवाने, या इच्छाओं पूरी करने, ऐसे मास्टरों के पीछे पड़ते हैं। वैसे संकल्प करने वाले मास्टर्स, कर्मों को निकालने वाले मास्टर्स, ऐसे गुड़ाकेश मास्टर्स के चक्कर में पड़ रहे हैं।

लेकिन हम जितना करेंगे उसी के ऊपर हमारा भविष्य है। यह जानिए। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप लोगों को थोड़ा श्रद्धा रखने से, आप लोगों से भाग्यशाली कोई नहीं होगा। करोड़ों लोगों में हम बहुत ही कम है। देखिए, जब स्वामी विवेकानंद थे तब करोड़ों लोगों थे, लेकिन वही महान हुआ। वैसे ही रमण महर्षि हुआ था। इस वर्ग के हैं हम सब लोग। कारण हम वही काम कर रहे हैं। इसलिए थोड़ा और श्रद्धा रखने को कहता हूँ।

मुख्यतः सत्य को नहीं छोड़ना, धर्म को नहीं छोड़ना, थोड़ा सा श्रद्धा रखना, और थोड़ा कष्ट करना। बस और कुछ नहीं चाहिए। यही मैंने पत्री जी के करीब से रहकर जाना हूँ, और आचरण कर रहा हूँ। यही मैं आपको बोध कर रहा हूँ।

अभी मेहर बाबा और क्या कहते हैं? '**जो भी साधक ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, आत्म साक्षात्कार प्राप्त करना चाहता है, ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करना**

चाहता है, तपन करता है! उनको सद्गुरु का सहायता जरूरी है'।

'स्वतंत्र रहकर अपना अन्वेषण कर कर एक साधक बहुत दूर जा सकता है, मतलब बिना किसी के सहारा, बिना गुरु, वह ध्यान कर सकता है। लेकिन गुरु का सहायता बिना 6-वां भूमिका को पार करना नामुमकिन है।'

इसलिए अगर 6-वां भूमिका को पार करना हैं तब एक गुरु को पकड़ना पड़ेगा। ज्ञानी गुरु को ही पकड़ना चाहिए, यह जानना चाहिए।

इतना ही नहीं, **'इस मार्ग में मध्यम भूमिकाओं में भी फस जाते हैं। तब गुरु क्या करेगा? वह ऐसे ना फसने देकर इस आध्यात्मिक मार्ग मतलब ज्ञान मार्ग के पतन अवस्थाओं से, और दुर्घटनाओं से रक्षा करता है। इसलिए एक साधक को गुरु का सहायता बहुत कीमती है, ऐसे कहते हैं बाबा जी'।**

देखिए हम चार सालों से ज़ूम क्लास में भाग ले रहे हैं,बहुत ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। लेकिन बहुत कारणों से कुछ लोग पूरी तरह से भाग नहीं ले पा रहे हैं। उनका मुख्य कारण है कि हम सब माया प्रपंच में हैं, माया में जी रहे हैं। इस माया हमें किसी भी रूप में आवाहन कर सकता है। श्री शंकराचार्य जी कहते हैं ना, यह संसार माया है, पति माया है, संपत्ति माया है, सब चीज माया ही है। उस माया प्रपंच में किसी भी तरह माया में गिर सकते हैं। हमें जानकारी भी नहीं होगा कि हम गिरे हुए हैं। मैंने कुछ समारोह में गया था, मुझे वह समस्या को देखना है, या बेटा का परीक्षा हैं, वैसे बहुत कुछ होंगे। वह सब जरूरी समझते हो।

बेटी की शादी की वजह से 6 महीने तक छोड़ने वाले भी हैं। और कुछ लोग मेरे बेटे की शादी होने के बाद कोई समस्या नहीं करके बोलने वाले हैं, कुछ लोग अपना बेटा का काम लगने के बाद कोई समस्या नहीं है कहते हैं। ऐसे कुछ ना कुछ कहते रहते हैं। कुछ लोग अपने व्यापार में समस्याओं ठीक होने के बाद कुछ नहीं होता है, ऐसे कहते हैं। ऐसे फस जाते हैं।

देखिए एक शादी में एक हफ्ता तक काम रहेगा या 15 दिन तक कुछ

ना कुछ काम रहता है। बाकी दिन क्या करते हैं? असलियत में उनके दृष्टि सिर्फ सुबह के 3 घंटे तक ही है ना। बाकी काम 21 घंटे में कर सकते हैं ना? बेटी के संबंधों के लिए घूम रहे हैं बोलने वाले हैं, मतलब 24 घंटे गाड़ी में घूमते रहेंगे क्या ? सोचिए ? यह लोग घर में नहीं रहते हैं क्या? और कुछ काम नहीं करते हैं? खाना नहीं बनाते हैं, घर को सफाई नहीं करते हैं, सिर्फ ध्यान ही नहीं करते हैं? कितना विचित्र की बात है? सिर्फ ध्यान ही बेकार काम हो गया क्या, बाकी काम जरूरी कहते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि उनको एक समस्या आई है उसके बाद कुछ नहीं है। उस समस्या के लिए एक महीना में, या 15 दिन में कचहरी में एक बार स्थगन लेते हैं, क्यों नहीं बाकी दो या तीन घंटे ज़ूम में नहीं आ रहे हैं?

इसलिए ऐसे ही फस जाते हैं। जब वह गुरु रहता है वह हमें याद दिलाता है। उस माया में फंस गए हो, फिर से श्रद्धा रखो, श्रद्धा कम होने पर हमें याद दिलाता रहता है...... तब हम दोबारा मार्ग में आते हैं। वही मेहर बाबा कहते हैं। आध्यात्मिक मार्ग में भरा हुआ प्रलोभनों से पतन हो जाते हैं।

अगर हम पतन हो जाते हैं, पीछे वाले हमसे आगे निकलेंगे और हम उनसे नीचे आ जाते हैं। मतलब आप बहुत पहले शुरू किया है, आज वह आपसे आगे निकल गया है। मतलब आप नीचे पतन हो गया ना ? ऐसे बहुत सारे दुर्घटनाओं से गुरु रक्षा करता है, कहते हैं मेहर बाबा जी।

इसलिए इन भूमिकाओं के बारे में आज हम जानते हैं। पत्री जी हमें सप्त ज्ञान भूमिकाओं के बारे में बताए हैं। भूमिकाओं, मतलब इस ज्ञान मार्ग में अलग-अलग स्थाई होते हैं। तो हम इस ज्ञान मार्ग में कौन से स्थाई पर हैं? यह जानते हैं। क्योंकि हम अभी ज्ञान प्राप्त करने को प्रयत्न हीं कर रहे हैं ना?

इतना ही नहीं हम हर दिन ध्यान करते हैं, ज्ञानी लोगों के किताबें पढ़ रहे हैं। हर दिन ज्ञान सीख रहे हैं। इस मार्ग में सेवा कर रहे हैं।

तब हम कितना ज्ञान पाए हैं? हम किस स्थाई पर है अभी जानते हैं।

इस ज्ञान में सात स्थितियां है। इन्हीं को सप्त ज्ञान भूमिकाओं कहते हैं, पत्री जी ने कहा है। वह क्या है?

1. शुभेच्छा ।
2. विचारण ।
3. तनु मानसम ।
4. सत्वा पत्ती ।
5. असम शक्ति ।
6. पदार्थ भावना ।
7. तुरीयम ।

इस प्रकार ज्ञान में साथ स्थितियां है।

1. शुभेच्छा ।

हम सब इस पहले स्तर पर आ चुके हैं। शुभेच्छा मतलब मुझे ब्र्म्म ज्ञान पाने को इच्छा है। मुझे ज्ञानी बनना है, और वह ज्ञान पराकाष्ठा पहुंचना है का इच्छा, आप लोगों में है, इसलिए मुझे और मेडम के पास आकर्षित हुए हैं। बाकी विषयों को हम ज्यादा प्रामुखता नहीं देते हैं। कारण यही है कि जो ज्ञान प्राप्त करता है उसे सब कुछ पाने समान है।

इसलिए किसी चीज के लिए, संकल्प रखकर पाने का कोई काम नहीं है। अगर आप ज्ञान प्राप्त करेंगे आप किसी और चीज पाने का कोई मतलब नहीं है। जिसको हमें पकड़ने पर समस्त पाएंगे, उसी को पकड़ना है, एक होशियारी का काम है। उसी को हम सब पकड़े हैं।

अगर तुम आरोग्य के बारे में देखेंगे, तब आपका पूरा जीवन उसी में खत्म हो जाएगा। अगर मनस का शांति के लिए करेंगे पूरा जीवन उसी में खत्म हो जाएगा। या आप जीवन में एक चीज़ को प्राप्त करने में लगे हैं, तो उसी चीज़ में सबसे महान बनना है, और उसी पर दृष्टि रखे हो तो, आप वही पाएंगे।

लेकिन जो भी आत्मा के ऊपर दृष्टि रखते हैं ! आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं! उसको और किसी चीज पाने को कोई जरूरत नहीं है। **'जिसको सीखने से और सीखने को कुछ नहीं बचेगा, वही आत्मज्ञान है'।**

आप जितना भी पाए हैं, कितने जन्मों में, कितने में चैंपियन बने हो, और कुछ करने को और पाने को होता ही रहता है। अगर आप संगीत में विद्वान हो, या बांसुरी बजाने में महान हो, या एक सितार बजाने में, ऐसे बहुत सारे हैं। तबला, गिटार जैसे बहुत हैं। अगर सब में चैंपियन हो और विशेष ज्ञानी हो, तब भी कुछ ना कुछ पाने को रहता ही है। लेकिन जो भी आत्मा को प्राप्त करते हैं, आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं उनको और कुछ करने को नहीं होता है।

हम वही सीख रहे हैं अभी। देखिए अगर 2000 का नोट कमाया है, तब सारे नोटों आपके पास होंगे ना। ऐसे ही आत्मज्ञान प्राप्त करने से, सभी पाने समान है।

मुझे आत्मज्ञान चाहिए, ब्र्म्हज्ञान चाहिए, मुझे आत्म साक्षात्कार पाना है, इस दुख सागर से शाश्वत के लिए बाहर निकलना है, और शाश्वत आनंद स्थिति प्राप्त करना है, अपना जीवन लक्ष्य को पाना है, यही सबका आकांक्षा है।

मैंने 'इस जीवन किस लिए' करके एक किताब लिखा हूँ। असलियत में इस जन्म क्यों लिए हैं? इस जीवन में हमें क्या करना है? हमारा लक्ष्य क्या है? हमारा गम्य स्थान क्या है? यह सब बातें इस किताब पढ़ने से मालूम होगा।

इस शुभेच्छा हम में है। इसलिए हर दिन श्रद्धा पूर्वक हम ज़ूम क्लास में भाग ले रहे हैं। हर दिन सुबह 3:00 बजे उठकर स्नान कर कर 4:00 से 6:30 तक ध्यान कर रहे हैं, बाद में आत्मज्ञान का संदेश सुनकर अगर कुछ प्रश्न है तो पूछ रहे हैं। यह सब मामूली विषय नहीं है। इसलिए जानिए कि शुभेच्छा का मतलब मुझे ब्र्म्ह ज्ञान चाहिए का इच्छा रखना। मुझे शाश्वत के

लिए दुख रहित स्थिति पहुंचने का तीव्र कांक्षा।

यही बात शिरडी बाबा ने कहा है कि अगर आत्म साक्षात्कार पाना है तो? उसमें सबसे पहले पुंक्त, मुमुक्षत्व या मुक्ति पाने का तीव्र इच्छा होना चाहिए।

ऐसे ही श्री आदि शंकराचार्य जी ने भी साधना चतुष्टयम में मुमुक्षत्व, मतलब मुक्ति पाने का तीव्र कांक्षा कहते हैं। इसलिए याद रखिए मोक्ष या दुख रहित स्थिति, दोनों एक ही है। इसलिए किसी को भी पहले मोक्ष चाहिए। इसके बिना कोई फायदा नहीं है।

इसलिए याद रखिए की कोई भी यही बात बताते हैं। जब आपको जितना भी मुश्किलें है, या रुकावटें हैं, या अवरोधों हैं, अगर दीक्षा और दृढ़ निश्चयता को नहीं छोड़ते हो, सिर्फ एक और जन्म काफी है।

पत्रीजी कहते हैं कि, आपको जो करना है करेंगे, तब आपको जो पाना है पाएंगे। मतलब अगर आप नहीं करेंगे तो नहीं पाएंगे ना? जो करना है नहीं करते हो तब अंदर से आपका भगवान या आत्मा का घोष सुनाई देगा।

पत्रीजी ने एक संदर्भ में कहा था। पूर्ण आत्मा अपने अंदर से ही आत्माओं को सृष्टि कर कर, इन शरीरों प्रवेश करवाकर, उनको एक लक्ष्य निर्देश करता है। मतलब आपको भी मेरे तरह बनना है, और तब से उनको अनुनित्य सहायता करता रहता है, पूर्ण आत्मा।

कुछ लोग क्या कहते हैं? मुझे दुर्घटना हुई, मुझे यह कष्ट हुआ, पूर्ण आत्मा ने क्या किया है ? लेकिन पूर्ण आत्मा ने जब आप मुर्गी को काटते हो, अंदर से बताता है, उनके हिंसा मत करो, वह पाप कर्म है। तब आपने सुना है क्या? अगर उनको सुनते तब आपको दुर्घटना ना होता? तब, आपको क्यों हुआ? क्योंकि जब वह आपको सहायता कर रहा था तुमने सुना नहीं। आपने उसकी सहायता मना किया, और समझे थे कि आपको सब मालूम है, और मुर्गी को खाया है। और पूछे थे कि यह मुर्गा किस लिए है ? मुझे खाने के लिए ही

ना, करके तुमने खा लिया। उसी का परिणाम यह दुर्घटना हुई। आप क्यों कह रहे हैं कि कोई पूर्ण आत्मा या देवता मुझे मदद नहीं करते हैं? आप गलती करने से पहले ही आपको चेतावनी दे रहे थे। याद रखिए कि हर पल, किसी भी विषय में, या संदर्भ में, आपका गलतियां, गलत बातों करने पर, आपके अंदर से चेतावनी देता रहता है।

अगर आप सोचेंगे कि सुबह 3:00 बजे उठना है तब जरूर उठ जाएंगे। किसने जगाया है? उसी ने ना? लेकिन आपका मनस सोने को कहता है, और फिर आप सो जाते हो। अगर आप सोएंगे तब आत्मा क्या करेगा? चुप रहता है। बाद में उठने के बाद पछताने से कौन क्या कर सकता है?

सच में अगर उठकर ढाई घंटे ध्यान करने से कितना ऊर्जा प्राप्त कर सकते थे? सोचिए एक बार? अभी इसे पूरा खोया है कि नहीं? मगर इस दुख से बाहर निकलने का इच्छा रहने पर क्या फायदा?

इसलिए पहले स्तर पर शुभेच्छा होने पर जरूर इस साधना मार्ग में आते हैं। ऐसे ही लोग हमारे पास आए हैं।

मैंने तो खुद बहुत गुरूओं को मिला हूँ।

पत्री जी के परिचय के बाद मुझे समझ आया है कि और कुछ नहीं चाहिए, यह काफी है, इससे और महान कुछ नहीं है। पत्री जी से मैं आत्मा हूँ का समझ आने पर, ज्ञान प्राप्त करना है, यह बात समझ आया। अगर ज्ञान प्राप्त करना है तो किसको आश्रय करना है? तब पत्री जी से कोई महान नहीं मिला।

तब वह क्या कर रहे थे? सबको ध्यान सिखा रहे थे, ज्ञान बोध कर रहे थे। यह दोनों करने से हम भी पत्री जी की तरह उन्नति प्राप्त कर सकेंगे, यह विषय समझा। तब से 20 सालों से पकड़ा हूँ। मैं बिना रूकते हुए, घूमता रहा हूँ। मै बहुत ध्यान प्रप्त किया हूँ। मेरी तरह मेडम भी बहुत ज्ञान प्राप्त की है। मेरी मेडम भी पहले दो-तीन साल छोड़कर, इसी मे घूमती रहती है।

इसलिए जो भी इस ज़ूम क्लास में आ रहे हैं! जरूर आत्मज्ञान प्राप्त करेंगे। जो भी भीमवरम तीन दिवसीय क्लास में आते हैं! वह सब ध्यान में अच्छी पकड़ मिलेगी ।

बाहर भी हम क्लास दे रहे हैं लेकिन मैं कहता हूँ कि पहले भीमावरम ही चुनो। कारण यही है कि उन्नति प्राप्त करने को, और ध्यान में अच्छी पकड़ पाने के लिए। साथ में हम पुण्य क्षेत्रों में भी क्लास कर रहे हैं। अगर हो सकता है वहां भी आ सकते हो। भीमावरम जैसे ही वहां भी हम दोनों रहेंगे।

भीमावरम क्लास में भाग लेने वाले,और ज़ूम क्लास में भाग लेने वाले, समझिए कि वह इन सप्त ज्ञान भूमिकाओं में पहला स्तर को पार कर दिए हैं।

2. विचारण ।

एक साधक को ब्र्म्ह ज्ञान कैसे प्राप्त करना है, का मीमांसा ही विचारण है। मतलब आत्म साक्षात्कार कैसे प्राप्त करना है? यह जानना है। इतना कष्ट कर कर ध्यान करना, और सब कुछ किस लिए कर रहे हैं? मतलब उस परिपूर्ण ज्ञान के लिए ही ना ? उसी को ब्र्म्ह ज्ञान कहते हैं।

वह ज्ञान प्राप्त करना है तो पत्री जी ने कहा है कि हमें आध्यात्मिक त्रिरत्नों को पालन करना है। वह है

1. श्वास पर ध्यास रखकर ध्यान करना ।
2. आत्मज्ञान संबंधित किताबें पढ़ना ।
3. आत्मज्ञान बोध करने वालों का संदेशों सुनना।

न केवल पत्री जी, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ महर्षि जी ने भी यही विषय बताया है। यह तीनों, आध्यात्मिक मार्ग में त्रिरत्नों जैसे हैं।

अगर हमें आत्मज्ञान प्राप्त करना है तो यह तीनों को पालन करना ही चाहिए। हम दोनों इस मार्ग में आते ही इनका पालन कर रहे हैं।

यह पालन करने से हम में बहुत बदलाव आया है, सत्य के बारे बहुत

विषयों जाने हैं। हमारे गलतियों को सुधारे हैं। जो भी हम जाने हैं वही विषयों को हमें सबको बोध कर रहे हैं ।

इसलिए इन सप्त ज्ञान भूमिकाओं में दूसरा है विचारण, इसके बारे में जानना चाहिए। अभी जो भी ज़ूम क्लास में आ रहे हैं ! यह ज्ञान सुन रहे हैं !वह लोग इस दूसरा भूमिका भी पार कर चुके हैं। क्योंकि सभी लोग यह सब श्रद्धापूर्वक पालन कर रहे हैं।

सुबह ब्रह्मी मुहूर्त में ध्यान कर रहे हैं ।

इस ज्ञान को हर रोज मेरे द्वारा या अम्मा द्वारा जान रहे हैं ।

ऐसे ही आत्मज्ञान संबंधित किताबें पढ़ रहे हैं । जो भी ज्ञान पाने के लिए अवसर है वह सब त्रिरत्नों को पालन कर रहे हैं।

जैसे पत्री जी ने कहा है, साथ में इस ज्ञान मार्ग में सेवा भी करना। मतलब हमें जो ज्ञान पाया है दूसरों को बांट रहे हैं।

क्योंकि पत्री जी ने हमें इस सृष्टि का महान सूत्र बताए है। वह क्या है? 'बांटने से बढ़ता है'। मतलब जो भी हम बांटते हैं वही बढ़ेगा ।

देखिए अगर आपको धन चाहिए, तब धन बांटना चाहिए। तब आपको जरूर धन बढ़ेगा। अगर आपको शांति चाहिए, सबको शांति में रहने देना है। तब आप भी शांति में जीएंगे। अगर आपको हिंसा नहीं चाहिए किसी भी प्राणी को हिंसा नहीं करना है। तब आपको कभी हिंसा नहीं होगा। अगर कुछ भी नहीं खोना है, तब किसी से चुराना नहीं है।

इसी तरह अगर आपको ज्ञान चाहिए तब आपको जो भी ज्ञान है, उसे दूसरों को बांटता रहना चाहिए। तब आपको ज्ञान बहुत बढ़ेगा ।

पत्री जी के परिचय के बाद, हमें जाना है कि हम आत्माएं हैं, केवल ज्ञान ही आत्मा को लाभदायक है, ज्ञान को बढ़ाने के लिए ज्ञान बांटना शुरू किए हैं। इसी प्रकार हमारे शिष्य गण भी वैसे ही कर रहे हैं।

लेकिन सही अवगाहन ना होने पर, कुछ लोग ज्ञान बांटने में गलतियां कर रहे हैं। क्योंकि बांटने को कहा था का मतलब जो है भी नहीं, उसी को भी बांट रहे हो, तब पता नहीं आपको ज्ञान बढ़ेगा या नहीं, लेकिन जो है वह भी चला जाएगा। क्योंकि सुनने वालों को मालूम नहीं, अगर हम जो चाहे बताएंगे, तब हमारा ज्ञान और घटेगा। इसलिए यहां पर साधकों को समझना है कि और ज़्यादा श्रद्धा रखना चाहिए। कोई भी किताब को पढ़कर बताने से केवल आपको ही नष्ट होगा।

इस दुनिया में बहुत सारे किताबें हैं, करोड़ों में है। किस स्थाई में वह लिखा है किसी को मालूम नहीं है। आजकल यूट्यूब और गूगल में देख कर दूसरों को बता रहे हैं, अगर असत्यों को बताते हैं केवल बताने वाला ही नष्ट होगा। ऐसे लोग इस आध्यात्मिक मार्ग में ना बढ़ेंगे मगर कई जन्मों पीछे हो जाएंगे ।

पत्री जी कहते हैं कि सब मानव लोग आत्माएं ही है लेकिन...... सब अलग-अलग स्तर पर है, एक ही तरह का प्रवर्तन नहीं होता है।

उसने इन आत्माओं को सात प्रकार विभाजन किए हैं। नया नया जन्म लिया आत्मा को 'शैशव आत्मा' कहते हैं।

इसी प्रकार और कुछ जन्म लेने के बाद, उसे 'बालात्मा' कहते हैं। और थोड़ा बढ़ाने के बाद उसे 'युवा आत्मा' कहते हैं। और ज्यादा ही जन्मों लेने के बाद उन्हें 'प्रौढ़ात्मा' कहते हैं। और ज्यादा बढ़ने पर 'वृद्ध आत्मा' कहते हैं। वैसे ही आखिरी जन्म पहुंचने वालों को 'विमुक्त आत्मा' कहते हैं। पूर्ण ज्ञान पाने वाले आत्मा को 'परमात्मा' कहते हैं। इस तरह आत्माओं में कई प्रकार के होते हैं।

ऐसे सारे आत्माओं मे कई प्रकार के प्रवर्तन होते हैं। ऐसे ही कुछ लोग बिना ज्ञान ही जो कुछ मालूम है बताते रहते हैं। वह भी यूट्यूब में रखते हैं।

यूट्यूब में पैसे मिलने से लोगों को आकर्षित करने के लिए असत्य भी

उसमें रख रहे हैं। अगर आप ऐसे विषयों को कहते हैं तब बताने वाला ही नष्ट होगा।

अगर कोई भी समझता है कि, जितना ज्यादा लोग गुरु के पीछे करते हैं उतना बड़ा गुरु है, मतलब आप फस गए हैं। इसलिए अगर आप ज्ञानी गुरु को चुन सकते हैं आप भाग्यशाली है।

बुद्धा ने स्पष्ट कहा है कि जो उम्र में बड़ा है उसे मैं बूढ़ा नहीं कहूँगा। बालक भी हो, अगर उसके पास ज्ञान है तब उसे बूढ़ा कहूँगा।

यहां पर उम्र का संबंध नहीं है। वह जितना भी कम उम्र का है अगर ज्ञान में पंडित है, तब जरूर वह महान है। इसलिए ऐसे लोगों का संदेशों हमें सुनना चाहिए।

इसलिए यहां पर, इस विचारण में आध्यात्मिक त्रिरत्नों में 'ध्यान' पहला है। यहां पर कौन सा सही ध्यान है? मतलब सिर्फ 'श्वास पर ध्यास' ही सही ध्यान है। कारण यही है कि सिर्फ 'श्वास पर ध्यास' ध्यान से ही मनस और सारे इंद्रियों काम नहीं करने का स्थिति में आते हैं। उसी को 'ध्यान स्थिति' कहते हैं। उस स्थिति में महान परम ब्र्स्म को आश्रय करते हैं। जिस ब्र्स्म ज्ञान को हम सब यह बता रहे हैं ! तपन कर रहे हैं ! उसको पाने के लिए ही परम ब्र्स्म को आश्रय करना ही है। उस ज्ञान सिर्फ उन्हीं के पास है और किसी के पास नहीं है। इसलिए अगर आत्मा को आश्रय करते हो तब वह ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। हमें चाहिए ब्र्स्म ज्ञान। अगर मोक्ष पाना है, या निर्वाण पाना है, तो उसको पकड़ना ही चाहिए।

इसलिए जानना है कि सही ध्यान 'श्वास पर ध्यास' ही है । हर एक को यह अच्छी तरह जानना चाहिए।

साथ-साथ अगर यह ब्र्स्म ज्ञान पाना है, हमें आत्मज्ञानियों का किताबें पढ़ना चाहिए।

ऐसे ज्ञान बोध करने वालों के सांगत्य करना चाहिए, ऐसे सेवाओं में

भाग लेना चाहिए। यह सब जरूर करना चाहिए। अगर यह सब करेंगे तब ज्ञान क्यों नहीं पाएंगे ? जरूर पाएंगे ।

इसलिए यह सभी हम आचरण कर रहे हैं । अर्थात इस भूमिका भी हम पार कर चुके हैं।

3.तनु मानसम ।

तनु मानसम का मतलब जो भी विचारण द्वारा साधना मार्ग को जाना है इस साधना में निमग्न होना चाहिए।

मतलब 'श्वास पर ध्यास' ध्यान, स्वाध्याय, सज्जन सांगत्य हर रोज़ आचरण करना ही तनु मानसम , कहते हैं पत्री जी।

इसी को हम श्रद्धा कहते हैं। सबको श्रद्धा पूर्वक करना ही, तनु मनासम। इस भूमिका का भी हम पार कर चुके हैं।

अगर श्रद्धा नहीं है तो इतने सालों से 3:00 बजे उठकर, स्नान कर कर, ध्यान में बैठेंगे क्या? साथ में किताबें भी पढ़ रहे हैं । सब कुछ श्रद्धा पूर्वक लिख रहे हैं! मेरे हिसाब में सबको कितने किताबें हो चुके होंगे? और उसका दोबारा भी लिख रहे हैं।

उन संदेशों को शाम वाली ज़ूम क्लास में बता रहे हैं। भीमावरम क्लास में भी बहुत लोग बहुत महीनों से, सालों से भी आ रहे हैं। मतलब कितना श्रद्धा है। तब ज्ञान क्यों नहीं बढ़ेगा? ज़रूर मिलेगा।

शिरडी बाबा भी स्पष्ट कहा है, ज्ञान प्राप्त करने के लिए 'श्रद्धा, सबूरी' दोनों होना चाहिए। मतलब साधना में श्रद्धा होना चाहिए और उस साधना में जो भी मुश्किलें होंगे उसको सहनशीलता से पार करना है। अगर यह दोनों है, तब कितनी भी उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। इन्हीं दोनों को स्पष्ट से कहा है।

इसी को श्री शंकराचार्य जी ने 'तितिक्षा' कहते हैं। इसलिए श्रद्धा के साथ, सहनशीलता होना चाहिए। श्री कृष्ण भगवान भी स्पष्ट कहा है कि,

'श्रद्धावान लभते ज्ञानम' । इसी ज्ञान को ही हम सब इतना कष्ट कर रहे हैं न?

मगर यह ज्ञान किस लिए? प्राथमिक स्तर पर हम अपने कर्मों को राहित्य करने के लिए। मतलब जिन कर्मों के वजह से हमें जन्मों मिल रहा है, उन जन्मों को रद्द करने के लिए ही इन कर्मों को रद्द करना है।

यह सिर्फ ज्ञान के वजह से ही होगा। लेकिन कर्म विपाक ध्यान से नहीं होगा। इसलिए हमें जानना होगा कि किस स्तर पर है। क्योंकि जो कुछ साधना किए हैं उनका निष्फल नहीं होना चाहिए। इसलिए अपने आप को खुद परीक्षा करना चाहिए। अगर कोई कमी है तो उनको ठीक कर कर आगे बढ़ना चाहिए।

इसीलिए गुरु का सूचनाओं जरूरी है। मैं बहुत लोगों को देखा हूँ, कि वह अपने आप 'श्वास पर ध्यास' ध्यान करते रहते हैं। लेकिन ऐसे कितने साल करते रहेंगे? सिर्फ ध्यान करने से ज्ञान कहां से प्राप्त होगा? कर्मों कैसे रद्द होंगे ? आत्म साक्षात्कार कैसे होगा?

जब तक कर्मों रहेंगे तब तक आत्म साक्षात्कार नहीं होगा। इसीलिए पहले कर्मों को रध्द करना है। इसके लिए ज्ञान अग्नि की तरह जलना चाहिए।

थोड़ा सा ज्ञान से काफी नहीं है। इसी विषय हमें सप्त ज्ञान भूमिकाओं में हमें विवरण दिया है। किस भूमिका तक पहुंचने पर हमारे कर्मों खत्म हो जाएंगे, वहां तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए। सहज बात है कि सामान्य लोगों को यह सब समझ नहीं आता है, आशक्ति भी नहीं होता है। इसलिए मैं कहता हूँ कि हम ज्ञान मार्ग में पहुंचकर भी इन आत्मज्ञान संदेशों पर सबको आशक्ति नहीं होता है।

ज्ञान आशक्ति होने वाले दुनिया में बहुत ही कम लोग होंगे। इतना श्रद्धा पूर्वक भी नहीं सुन पाते हैं, तंग हो जाते हैं। बैठकर ध्यान कर सकते हैं, शाकाहार रैली में भाग ले सकते हैं, वह सब कुछ इंतजाम करवा सकते हैं। लेकिन बैठकर, यह सब सुनकर, लिखकर, श्रद्धापूर्वक आचरण करने में उनका

कष्ट होता है। इसलिए बहुत ही कम लोगों को यह आशक्ति होता है।

सहज बात है कि किसी को भी सांसारिक जीवन में कुछ मुश्किलें होते हैं, समस्याओं होते हैं, कुछ जिम्मेदारियां होते हैं। समय देना मुश्किल है, लेकिन अगर हम में श्रद्धा है तो जितना कर सकते हैं वह करेंगे। पत्री जी कहता है कि समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार पत्री जी कहते हैं कि सांसारिक जीवन में ही निर्वाण को प्रयत्न करना चाहिए। सांसारिक जीवन को छोड़ने को नहीं कहा, स्त्री अपना काम करती रहना है, और पुरुष अपना काम करता रहना चाहिए। यह करते-करते साथ में खाली समय को बर्बाद मत करने को कहते हैं। जैसे फालतू बातें, वीडियो देखना, टीवी देखना, और बेकार में समय बिताना नहीं है, फालतू समारोहों में जाना से अच्छा, उस समय को ज्ञान प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल करना है ......और अगर शरीर छोड़ भी दिया हम पुण्य लोकों में जाकर वहां पुण्य को अनुभव करते हैं।

और अगला जन्म लेने वक्त बिना समस्याओं वाली श्रीमान परिवारों में जन्म या योगी लोगों को परिवार में जन्म या अच्छा सहकार करने वालों के परिवार में जन्म लेंगे ।

दूसरे लोगों को ऐसा नहीं है, उनके अपने कर्मों में से ही चुनकर उनके प्रकार जन्म तय करते हैं। अगर वह, लोगों को धोखा दिया, अधर्म व्यवहार किया, नष्ट किया और हिंसा किया, तब क्या होगा? उसी को अनुभव करने के लिए वैसे ही जन्म लेना पड़ता है ।

लेकिन इस मार्ग में थोड़ा सा कष्ट कर कर श्रद्धापूर्वक करेंगे, तब यह सारे मुश्किलें दूर होकर महान जन्म हमें मिलेगा। मैं एक विषय बता रहा हूँ, अभी का जीवन देखकर रोने का आवश्यकता नहीं है। याद रखिए इस सृष्टि में कुछ भी शाश्वत नहीं है। मतलब आपका गरीबी या मुश्किलें या अंग वैकल्य शाश्वत नहीं है। परिवार में समस्याओं भी शाश्वत नहीं है।

लेकिन दृढ़ निश्चयता से इस ज्ञान मार्ग में सब पालन करेंगे तब बिना समस्याओं वाली जन्म मिलेगा। जितना तपन से इस जन्म में हासिल करना चाहते थे! इसी प्रकार का जन्म मिलेगा। बस आप करते रहिए। जबकि मुश्किलें हैं, तब भी दृढ़ निश्चयता के साथ करते रहना, इसी जन्म में भी आपके किए हुए साधना के हिसाब से, सब अनुकूल रहेगा। आपका मुश्किलें धीरे से हट जाएंगे, आपका आर्थिक समस्याओं भी कम होंगे, आरोग्य भी ठीक होगा। 6 महीने तक अनुभव करने वाले मुश्किलों 3 महीने में ही खत्म हो जाएंगे, बहुत खुश रहेंगे।

आपके परिवार के परिस्थितियों भी बदलेंगे। आपका बात नहीं मानने वाले भी मानना शुरू करेंगे। लेकिन इस ज्ञान मार्ग में आपका श्रद्धा कम नहीं होना है। इसलिए फिर कह रहा हूँ कि हम सब बहुत भाग्यशाली हैं। कोई भी दिन नहीं छोड़कर साधना करना ही 'तनु मानसम' है। यही बात पत्री जी कहते हैं। निर्विघ्न मतलब बिना कोई अवरोध होकर मतलब बिना छोड़कर, श्रद्धापूर्वक आचरण करना चाहिए। इसलिए हमें श्रद्धा नहीं छोड़ना है और श्रद्धा को बढ़ाना है।

4.सत्वा पत्ति ।

पत्री जी ने कहा है कि सत्वा पत्ति का मतलब शुद्ध सात्विकता को प्राप्त करना है। मतलब तमोगुण और रजोगुण बिल्कुल शून्य स्थिति होना चाहिए। सात्विक स्थिति में भी पराकाष्ठ होना है, उसी को शुद्ध सात्विकता कहते हैं।

पत्री जी ने एक और विवरण दिया है। तमोगुण का मतलब आलसी तत्व है। यह हम सब पार कर चुके हैं। सुबह 3:00 बजे उठकर, स्नान कर कर, ध्यान में बैठना, मतलब हम तमोगुण पार कर चुके हैं।

रजोगुण का मतलब, मुझे मालूम है का गर्व और अहंकार। लेकिन यह भी हम पार कर चुके हैं। क्योंकि जो कोई समझता है कि उन्हें सब मालूम है वह

और सीखने का आशक्ति नहीं दिखाता है। मैं मास्टर बन गया हूँ, मुझे और क्या सीखना है के भाव में रहता है। लेकिन हम सब आगे भी सीख रहे हैं। इसलिए यह दोनों हम पार कर चुके हैं। मतलब सत्वा पत्ति में आ ही गए हैं।

क्योंकि सात्विकता में आने के बाद भी, कुछ लोगों में तमोगुण लक्षण होते हैं, रजोगुण लक्षण भी होते हैं। मतलब सात्विकता में आने के बाद अगर यह लक्षण रहते हैं, मतलब आलसी तत्व और गर्व, या अहंकार से, मैं बहुत किताबें पढ़ लिया, मैंने बहुत कुछ जाना, ऐसे भाव में रहने वाले अभी सत्वा पत्ति में नहीं आए हैं।

यहां पर सात्वा पत्ति का मतलब शुद्ध सात्विकता, हम पहले कह चुके हैं। इस शुद्ध सात्विकता में तीन स्थाई कह सकते हैं।

शुद्धता, परि शुद्धता, और महा परिशुद्धता।

मतलब शुद्ध सात्विकता। प्रारंभ दशा में शुद्धता कहते हैं, आगे अगर मनस और शुद्ध हो जाता है तो परि शुद्धता कहते हैं।

अगर मनस यहां है? या नहीं है? का स्थिति में रहते हैं तब महा परिशुद्धता कहते हैं।

लेकिन जो भी महा परिशुद्धता स्थित मतलब पूरा शुद्ध सात्विक स्थिति पहुंच सकते हैं, वह लोग यह भूमिका भी पार करने वाले होंगे। अगर नहीं पार किया, जैसे मेहर बाबा कहते हैं, वह लोग मध्य भूमिका में फंस चुके हैं। इसलिए तमोगुण और रजोगुण लक्षण को पूरी तरह से पार करना है। उनका बिल्कुल प्रभाव नहीं रहना चाहिए।

इस 4-वां ज्ञान भूमिका के बारे में पत्री जी कहते हैं कि, यह ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन सांगत्य द्वारा साधना तीव्र स्थाई पहुंचने वाला स्थिति है। तब वह लोग क्या करते हैं? उस तीव्र साधना द्वारा अपार शक्ति प्राप्त कर कर, नाड़ी मंडल का शुद्धिकरण करते हैं। तब उनका मनस पूरा नियंत्रण में आता है।

वही योगी का स्थिति है। 'अहम ब्र्मस्मि' का सैद्धांतिक रूप में जानने का स्थिति है।

यह 4-वाँ भूमिका का मतलब ध्यान, स्वाध्याय और सज्जन सांगत्य के द्वारा साधना तीव्र स्थाई तक पहुंचना है। यहां पर मनस पूरी तरह नियंत्रण में होता है। उन्हें अरिशठ वर्गों मतलब काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य, नियंत्रण में रहते हैं। या जब मनस पूरा नियंत्रण में होता है जो भी परीक्षा यहां होते हैं, जैसे कीर्ति, कनकम और कांता, उनको भी पार कर सकते हैं।

इसलिए पत्री जी ने क्या कहा है? कि, अगर मनस पूरा नियंत्रण में आ गया, मतलब यह 4-वाँ भूमिका में आप आ गए हैं। तभी योगी का स्थिति है। भागवत गीता में कहा गया है ना! सबसे महान योगी है। ऐसे ही, योगी का स्थिति होता है।

उसने और क्या कहा है? भागवत गीता में कहा है 'योगो भवती दुःखः'। मतलब दुख से वह प्रभावित नहीं होता है। अगर यह स्थिति प्राप्त करेंगे, तब वह बहुत महान स्थिति में आ गए हैं। असलियत में इस जन्म में यह चौथा भूमिका पहुंचना ही काफी है। बाद के भूमिकाओं एक ही जन्म में पूरा कर सकते हैं, यह जानना है।

मैं भी यही कहता रहता हूँ, इसी के लिए कष्ट करने को कहता हूँ। एक प्रकार से हम यही भूमिका में हैं। हम सब अपने-अपने स्थाई में हैं। प्रारंभ, मध्यम, आखिरी। इसमें आखिरी स्थिति ही शुद्ध सात्विकता। वही योगी का स्थिति है। अहम ब्र्मास्मि को सैद्धांतिक रूप से जानने वाला स्थिति। हम सब जान चुके हैं। और आगे कह सकते हैं की वह 'ब्र्म विधुः' होने का स्थिति है।

और भी कह सकते हैं कि अगर शुद्ध सात्विकता में हैं, आखिरी स्थिति पहुंचने पर, हनुमान जी से तुलना कर सकते हैं। हनुमान जी शुद्ध सात्विकता में ही है। सात्विक स्थिति में विभीषण, रजोगुण में रावणासुर, तमोगुण में कुंभकरण, निर्गुण स्थिति में श्री रामचंद्र जी। यह पूर्ण ज्ञानी का स्थिति है।

लेकिन हम यह तीनों स्थितियों को पार कर कर, इस स्थिति पहुंचने का प्रयत्न में रहते हैं। इसके लिए और कष्ट करना हैं, और ज्यादा श्रद्धा रखेंगे तो, यह हासिल कर कर जन्म को धन्य कर सकते हैं। यह पार कर कर 5-वा भूमिका में अगर आ सकते हैं, आप बहुत ही बड़ा महान है। आपको किसी का कहने कि जरूरत नहीं है। ऐसे साधकों बहुत अच्छा स्थिति पहुंच गए हैं।

ऐसी स्थिति पहुंचने को श्री कृष्ण भगवान भी अध्याय 2-45, में कहते हैं।

श्लोकः त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन ।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ।। (भ.गी.2-45)

तात्पर्य : हे अर्जुन वेदों त्रिगुणात्मक सांसारिक विषयों पर कहते हैं। आप त्रिगुणों को छोड़कर, द्वंदों बिना, निरंतर शुध्द सात्विकता को आश्रय करने वाला, योगक्षेम दृष्टि नहीं रहने वाला, आत्मज्ञानी बन जाओ।

अगर यह हासिल करते हैं तब श्री कृष्ण जी का कहने वाले वह स्थिति को भी पार चुके हैं। मतलब सात्विकता भी पार करना ही शुध्द सात्विकता है। वही ब्र्म्हा विधुः, वही सत्वा पत्ति स्थिति प्राप्त करने वाला है। महान लोग यही कहते हैं। इसलिए तमोगुण, रजोगुण लक्षणों को हमें अपने अंदर से पूरी तरह निकालना चाहिए। थोड़ा सा भी नहीं दिखना चाहिए। यही हमें पत्री जी कहा था। इस स्थिति में आना ही महान है। इस स्थिति को प्राप्त करना और भी महान है।

यहां पर गुरु क्या करता है ना, अगर थोड़ा सा भी उन लक्षणों को हममें दिखने से वह चेतावनी देता है। हमें पीछे नहीं जाने देगा। हमें फोन करके क्यों तुम फिर से पीछे हो गया, नहीं तो अगर कहीं भी थोड़ा गलतियां हुआ है तो उन्हें फिर से सही रास्ते पर लाना, और वैसे गलतियां नहीं करने को चेतावनी देना, ऐसे सहायता गुरु कर सकते हैं ।

कहां पर हम रुक गए हैं, या गलतियां कहां कर रहे हैं, यह सब कुछ जानना है तो इस सत्वा पत्ति को हर एक को बार-बार जरूर पढ़ना चाहिए। यह बहुत जरूरी बात है। आपको कोई भी विमर्श कर सकता है, या दूषित कर

सकते हैं, तब अगर आपका मनस को नियंत्रण में नहीं रख कर, अगर आप कहेंगे कि मुझे कहेंगे क्या? तब आप मे अहंकार है। याद रखिए। वह मुझे क्या कहेंगे? वह मुझे क्या कह सकते है? ऐसे समझ कर उनके प्रभाव मे नही पढना है।

उन्हें जो करना है करने दो हमें क्या है? हम अहम ब्र्मास्मि करके सैध्दांतिक रूप से जानने वाले स्थिति में हैं। मतलब मैं आत्मा हूँ का विषय जानते है। तब आपको मैं यह देह नहीं हूँ का समझ आया है ना! तब इस शरीर का नाम आप नहीं है का जानकारी है ना! तब इस नाम से हमें विमर्श भी करें या अपमान करें या कुछ भी करें, हम समाधान नहीं देते हैं। अगर आपका अवगाहन में है कि वह मुझे कुछ नहीं कर सकता है, तब प्रतिक्रिया क्यों होगा।

अगर हम आत्मा हैं का अवगाहन रहेगा, तब कोई भी कुछ कहे हमें फर्क नहीं पड़ता है। हमे अपना काम करते रहना चाहिए। रूकना नहीं और दूसरे लोग क्या सोचेंगे का परवाह नही कर कर, हमे अपना काम करना चाहिए। ज्ञानी लोग ऐसे होते हैं। अगर आप दूसरे लोगों क्या कहेंगे को सोचने लगेंगे, तब अपने आप को उन्नति होने में रूकावट डाल रहे हो। आपका दिया हुआ अवसर खो बैठेंगे।

ऊपर लोकों में बहुत इंतजार करने के बाद हमें यह शरीर मिला है। आत्मा, हम जो है, ऊपर लोक से आए हैं। हम सबने यह कह कर आए हैं कि मैं यह काम पूरा करूंगा, मैं यह ज्ञान प्राप्त करूंगा, मेरा लक्ष्य को प्राप्त करूंगा, मैं इस मोक्ष को पाऊंगा, मुझे दोबारा देह दे दीजिए, ऐसे बहुत भीख मांगने के बाद हमें यह शारीर दिया गया है।

इसलिए दिया हुआ इस शारीर या शरीर को आत्मा के लाभों के लिए उपयोग न करने से हम ही नष्ट हो जाएंगे। हमें क्यों इस देह को नष्ट करना है? अगर आपको मालूम होगा कि एक दिन का वृधा करने से हमें अपने आत्मा को कितना नष्ट किए हैं, अगर आप समझ सकते हैं तब एक दिन क्या, एक क्षण भी आप वृधा नहीं करेंगे।

देह अवसरों को देखने के बाद, बाकी समय को वृधा नहीं करना है। श्री कृष्ण भगवान ने कहा है ना? त्रिगुणों को पार कर कर शुद्ध तत्व को आश्रय करना है। वही है सत्वा पत्ति। बिना द्वंदों रहना चाहिए। हार-जीत, निंदा - स्तुति, मान- अपमान, यह सब में समस्थिती रहना चाहिए।

इसलिए अगर इस भूमिका को हमें हासिल कर सकेंगे, काफी है। इसको पार कर कर अगला भूमिका में चलेंगे तो आप बहुत भाग्यवान हो। वह अपना दृढ़ निश्चयता के ऊपर है। पत्री जी ने स्पष्ट कहा है कि संसार में ही निर्वाण।

इसलिए संसार मतलब परिवार को, जिम्मेदारियां को, नहीं छोड़ना है। जितना भी रुकावटें आएंगी अपनी दृढ़ निश्चयता के साथ आगे बढ़ना चाहिए। तब अगला जन्म में कोई भी अवरोधों नहीं रहेंगे, तब वही आखिरी जन्म होगा।

अभी तक हम चार भूमिकाओं के बारे में जाने हैं। भूमिका का मतलब स्थिति।

मानव लोग अपने जन्म में प्रवेश करने के बाद जन्म रहित स्थिति पहुंचने के लिए कई प्रकार के स्थितियों को पार करता रहता है। कहां तक उन्नति पाया है, के बारे में, हर एक अलग-अलग तरीके में बताए हैं।

श्री कृष्ण भगवान गुणों के हिसाब से बताएं हैं। तमोगुण वाला लक्षण, रजोगुण वाला लक्षण, सात्विक गुण वाला लक्षण, शुद्ध सात्विक गुणवान के लक्षणों, ऐसे कह चुके हैं। आखिर में निर्गुण को पराकाष्ठ कहा है।

इसी प्रकार पत्री जी आत्मा स्थिति के हिसाब से बताया है। इनके बारे में पहले बता चुके हैं।

इसी प्रकार कुछ लोग चक्रों के हिसाब से बताते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि चक्र को क्रियाशील हो जाते हैं। चक्र क्रियाशील नहीं, अगर आपका आत्मा का स्थाई बढ़ता है, इस चक्र स्थिति से अगला चक्र स्थिति में जाते हैं, ऐसे कहते हैं।

ऐसे ही मूलाधार, स्वादिष्ठान, मणिपूरका, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा, कहते हैं। सहस्त्र चक्र नहीं है, यह आखिरी स्थिति है। ऐसे एक एक ने अलग तरीके से बताए हैं। कुछ लोग डीएनए के बारे में बताते हैं। उन्हीं को डाइमेंशन कहते हैं।

इसी प्रकार योगी लोग भूमिकाओं के हिसाब में बताते हैं। उन्हीं को सप्त ज्ञान भूमिकाओं हैं। आध्यात्मिकता और ज्ञान के हिसाब से किस स्तर पर हैं, हमें यह भूमिका सूचना करता है।

अलग लोगों ने, मानव का ज्ञान के स्थाई को अलग अलग प्रकार बताए हैं। अब आध्यात्मिक हिसाब से उन्नति प्राप्त करने से, आप यह भूमिका में आ चुके हैं, कहते हैं। आप आत्मा के हिसाब से उन्नति को आप इस भूमिका में हैं, कहते हैं। यह सब हमें अपने आप को परीक्षा करने के लिए, और हम किस स्थिति में हैं जानने के लिए, हमारा साधना मे कहा तक हमें पहुंचा है, यह सब जानने के लिए यह सारे मापन हमें बहुत उपयोग होता है।

ओहो! मैं कितना साधना कर रहा हूँ, यहां इस स्थिति तक पहुंचा हूँ, और अगर आगे जाना है मुझे यह साधना काफी नहीं है, मुझे और ज्यादा कृषि करना चाहिए, यह सब हमें समझ आएगा। इसलिए यहां सब हमारे मापन है। जितना किया है हमें जानना है ना? हम कहां हैं? ऐसे करते-करते क्या फायदा?

हम सब 4-वा भूमिका में हर एक अलग-अलग स्तर पर हैं। लेकिन हम सब 4-वा भूमिका पहुंच चुके हैं। थोड़ा और श्रद्धा रखने पर 4-वा भूमिका 'सत्वा पत्ति' भी पार करेंगे ।

इतना ही नहीं आखिरी स्थिति 'तुरीयम' स्तर को पहुंचने में बहुत पास आ चुके हैं। इसलिए यहां हमें थोड़ा और कष्ट करना चाहिए, श्रद्धा रखना चाहिए। प्रापंचिक व्यवहारों में आशक्ति कम करना चाहिए। अगर यह 4-वा भूमिका सत्वा पत्ति को पार सकेंगे, तब 'असंशक्ति' भूमिका में आएंगे। 'असंशक्ति' क्या है अभी जानते हैं।

5.असंशक्ति ।

मतलब दिव्य चक्षु उत्तेजित होने वाला स्थिति। शरीर और मनस दोनों तत्कालीन है, का विषय संपूर्ण तरह से जाना है। इसलिए अगर इन दोनों पर पूरी तरह से अनाशक्ति है, वही असंशक्ति कहते हैं।

इसी को श्री कृष्ण भगवान 'पद्मपत्र मिवांभस' कहते हैं। मतलब कमल का पत्ता पर पानी का बूंद जैसे रहना। मगर इनका सांसारिक व्यवहारों में अनशक्ति होने पर भी, धर्म निष्ठा और कर्मनिष्ठा रहेंगे।

तन और संसार के व्यवहार में तटस्थ दृष्टि रखते हैं। दिव्य चक्षु उत्तेजित होने से यह सत्य द्रष्टा होने जा रहा है। इसलिए उसी के ऊपर पूरी तरह आशक्ती और एकाग्रता रखता है। इसी को असंशक्ति कहते हैं।

इस स्थाई तक पहुंचने वालों को 'ब्र्म्म विध्वर' कहते हैं। 4-वा स्थिति तक पहुंचने पर 'ब्र्म्म विधुह' कहते हैं। यह शीर्षकों भी स्थितियां ही है।

अगर उस स्तर तक पहुंचे हैं मतलब आप उसका अर्हत पाया है। अगर उस स्तर तक नहीं पहुंचने से वह शीर्षकों देने से कुछ फायदा नहीं है। वह महान नहीं है।

इसलिए पत्री जी का कहने वाले यह सारे विषयों के बारे में थोड़ा गहराई में जानते हैं। असंशक्ति मतलब दिव्य चक्षु उत्तेजित होने वाला स्थिति। यहां आपको याद रखना है कि जैसे आप उन्नति कर रहे हैं, आपका साधना, स्वाध्याय, सज्जन सांगत्य, यह सभी अच्छी तरह करने से ही आपका दिव्य चक्षु उत्तेजित हो सकता है।

यहां एक विषय याद रखना है मतलब तीसरा आंख उत्तेजित न होने से क्या मैं इस स्थिति तक नहीं पहुंचा हूँ? यह संदेह आ सकता है। लेकिन यह जरूरी भी नहीं है। पत्री जी ने हमें स्पष्ट कहा है कि, अगर पिछले जन्म में हमारा तीसरी आंख खुल गया तो, इस जन्म में जितना भी साधना करो वह खुलेगी नहीं। कारण यही है कि हम नया अनुभव के लिए और नए पाठों सीखने

के लिए आए हैं। और आगे का ज्ञान स्थिति को बढ़ाने और दूसरे कर्मो के लिए आते हैं।

ज्ञान पाने के बाद उसका क्या काम है? वह ज्ञान दूसरों को बांटना है। इसलिए इस भूमिका में रहने वालों के और लक्षणों को जानते हैं। इन लोगों शरीर और संसार जीवन दोनों तत्कालीन है, को जाना है। यह शरीर नहीं रहेगा और संसार भी नहीं रहेगा। श्री शंकराचार्य जी ने कहा है ना! तन भी माया, यह संसार भी माया, यह सब कुछ ही समय के लिए है, मतलब शाश्वत नहीं है। यह विषय को पूरी तरह जानने वाला है। इसलिए इन लोगों को उन पर आशक्ति नहीं रहता है। मतलब शरीर और शरीर संबंध सुखों पर, भोगों पर, संपत्ति पर, ऐसे विषयों में आशक्ति नहीं रहता है। जो आएगा आता रहेगा, बस अपना काम करता रहना है। ऐसे अनाशक्ति को ही 'असंशक्ति' कहते हैं।

पहले कि तरह सिनेमा जाना है, मौज मस्ती करना है, वहां जाना है, यहां जाना है, वहां का महान विषयों को देखना है। यह सब नहीं होती है, हिमालय को जाना या ऊटी को जाना, ऐसे कुछ नहीं होता है। उनका दृष्टि एक ही है, आध्यात्मिकता में और आत्मा की उन्नति प्राप्त करना है, और ज्ञान बढाना है। और ज्ञान में पराकाष्ठ जाना है। यही उनका दृष्टि रहता है। ऐसे लोगों का प्रवर्तन कैसे रहता है? श्री कृष्ण भगवान कहते हैं कि 'पद्म पत्र मिवांभस' मतलब कमल का पत्ता पर पानी का बूंद जैसे।

देखिए जबकि पत्ता पर पानी रहता है उसे चिपकता नहीं है। ऐसे ही संसार में रहते हुए भी ममकार नहीं रहता है।

इसीलिए कहते हैं की नाव पानी के ऊपर रहना है, मगर पानी नाव के अंदर नहीं होना।

मतलब आप संसार में रहना लेकिन संसार आपके अंदर नहीं रहना चाहिए।

संसार में रहते हुए पति को क्या चाहिए, वह देखते हैं, वैसे ही पत्नी

को जो चाहिए को देखते हो, बच्चों के जरूरतों को देखते हो, उनको जो सहायता देना है देते हो, चैन देते हो लेकिन बैठकर रोते नहीं हो। ना मेरा बेटा ऐसा हो गया, मेरा जीवन ऐसे हो गया, मेरा पति चला गया है, मेरी पत्नी चली गई, मेरे बच्चे चले गए, तब मेरा जीवन किस लिए, मेरे रहने से क्या फायदा, यह सभी प्रश्नों नहीं होते हैं। आप सिर्फ सोचेंगे कि अपना प्रणालिका प्रकार चले गए हैं। अब मुझे जो करना है उस पर दृष्टि रखूंगा। बल्कि रोते नहीं रहेंगे। याद रखिए जो करना है वह करते रहेंगे। जो कुछ भी हो सब अच्छे के लिए हो रहा है कह कर अपना काम में आगे बढ़ते रहते हैं।

वैसे ही कर्मों करते रहते हैं, धर्म बद्ध होकर जीते रहते हैं। इसलिए तन और संसार के विषय में तटस्थ दृष्टि रखते हैं। साथ में उनका दिव्य चक्षु उत्तेजित हो चुका है, इसलिए सत्य द्रष्टा होने वाला है। सत्य द्रष्टा मतलब आत्म साक्षात्कार होने वाला है। इसलिए उनका पूरी दृष्टि उसी के ऊपर रहता है, उनका आशक्ति उसी पर रहता है।

श्री रमण महर्षि को देखिए। सिर्फ आत्मा के ऊपर सारे दृष्टि और किसी के ऊपर नहीं है। हमारे पत्री जी के सारे बातें सिर्फ आत्मा संबंधित ही है। उनका सारा काम आत्मा संबंधित ही है। उनका सोच भी सारे आत्मा संबंध रहता है। उसने आत्मा का अनुभूति पाया है। इसी को असंशक्ति कहते हैं। ऐसी स्थिति पहुंचने वालों को 'ब्रम्ह विध्वर' कहते हैं।

अगर इस स्तर तक पहुंचेंगे, तब आप शरीर छोड़ने के बाद जनालोक पार करेंगे। हम बहुत बार कह चुके हैं कि जनालोक पार करेंगे तो हम महान लोग हैं। इस ज्ञान पाने वाले, यह साधना करने वाले, इस स्तर तक पहुंचने वाले जरूर जनालोक पार करेंगे। यह लोग पराकाष्ठ पहुंचने वाले हैं, आखिरी स्थिति तक पहुंचने वाले हैं।

पत्री जी कुछ लोगों को शीर्षकों देते रहते हैं। वह बड़ा महत्व नहीं है! वह 'ब्रम्ह विधुह' है या 'ब्रम्ह विध्वरिष्ट' है, करके देते रहते हैं।

मैंने पत्री जी से पूछा है कि आप सबको शीर्षकों दे रहे हैं मगर हम उस स्तर तक पहुंचे हैं क्या? वह कहते थे कि आया हुआ और आने वालों को देते हैं।

इसलिए यहां पर बहुत कृषि करना चाहिए। इस संसार में जहां कहीं भी अटक गए हो, तब इस स्तर तक नहीं पहुंचेंगे। इसलिए मैं आप लोगों को ममकार को कम करने को कहता हूँ । उनको छोड़ना नहीं, बच्चों को या पति को या पत्नी को, उनके साथ संसार में रहो, छोड़ने की जरूरत नहीं है। भुक्ति के लिए कमाओ, उद्योग, व्यापार करो, लेकिन इस में निमग्न मत होना चाहिए। 'संसार में निर्वाण' का मतलब इस निर्वाण मार्ग में यह संसार के सुखों को छोड़ने का जरूरत नहीं है। सभी को अनुभव करना है। अगर आपका दृष्टि भोगों के ऊपर रहेगा, तब कमी का महसूस हो सकता है। लेकिन अगर आपका दृष्टि आत्मज्ञान के ऊपर रहेगा तब भोगों के बारे में सोचेंगे नहीं, यही मैं कहता हूँ।

इसलिए हमारा दृष्टि संसार के ऊपर होना? या आत्मज्ञान पर होना चाहिए? यह जानना चाहिए। जितना ज्यादा आपका आत्मा का निर्धारण होगा, उतना ज्यादा आप आत्मज्ञान पर दृष्टि रखेंगे। आत्मा को प्रमुखता देगा, आत्मा के बारे में ही सोचते हो। आत्म कर्मों ही करते हो, आप आत्मा सेवा ही करते हो, आत्मा जिम्मेदारी ही लेते हो, आत्मा का कर्मों ही करते रहोगे, आत्मा का उन्नति को ही देखते हो, आत्मा का महानता समझते हो, आत्मा का बढ़ोतरी के देखते हो।

अगर आप शरीर समझेंगे तब संसार के बारे में सोचेंगे, सुखों पर, और भोगो पर सोचते होंगे, परिवार के बारे में, बंधु वर्गों के बारे में, सोचते होंगे। अगर उनको कुछ होगा तब दुख होता है।

जब आत्मा के ऊपर दृष्टि रखते हो अगर उन लोगों को कुछ होने पर भी आप समझेंगे कि उनकी अपनी कर्मों आधारित ही हुआ है, और कर्मों खत्म होने के बाद ठीक हो जाएंगे का समझ रखते हो,अपने साथ भी ऐसे सोचते हैं।

कारण यही है कि भूतकाल में कुछ, निषिद्ध कर्मों किया है, कष्ट आया है, ध्यान कर कर थोड़ा सहनशीलता दिखाएंगे तब कुछ दिनों बाद उनसे बाहर निकलेंगे। इसलिए रोना नहीं बल्कि सहनशीलता रखना चाहिए। साथ में अगर सेवा कार्यक्रमों में भाग लेंगे तब जल्दी ही बाहर निकलेंगे।

आप, आत्मा होने से, अगर अपने बारे में सोचेंगे, आध्यात्मिकता में बहुत आगे बढ़ेंगे। लेकिन अभी सब लोग सांसारिक जीवन में लीन हो गए हैं। अपने बच्चों, पोते और आगे प्रपोते के बारे में ही सोचते हैं। वही आपका प्रपंच है। लेकिन सबके ऊपर ममकार छोड़ना चाहिए। सिर्फ अपने बारे में, मतलब आत्मा के बारे में ही सोचना चाहिए।

क्योंकि? जिस शरीर के लिए सब कुछ किए हो, पूरा जीवन कष्ट किया हो, वह अंत में नहीं रहेगा। आप मरने के बाद उस शरीर के बाहर आते हो। तब समझेंगे क्या मैं शरीर नहीं हूँ। अरे यह क्या है? इतने दिनों तक मैं शरीर ही समझा, यह सब करने के बाद मैं यहां ऊपर हूँ और मेरा शरीर नीचे बिस्तर पर अचल रहकर पड़ा है। थोड़ी समय बाद उस शरीर को शमशान में ले जाते हैं और जला देते हैं।

तब ऊपर से देखकर सोचते होंगे कि, यह राख होने वाले शरीर के लिए अपना जीवन कष्ट किया, पापों किया, गलतियां किया हूँ, और कर्मों को बड़ा दिया। कितनी गलती कर दिया, मतलब वह शरीर में नहीं हूँ ना! तब आप समझेंगे कि आप आत्मा है। लेकिन अभी सब कुछ हो गया है अभी कुछ नहीं है।

तब आप समझेंगे कि मेरे लिए, आत्मा के लिए, सबसे कीमती बहुमान यह शरीर है। उस शरीर को उपयोग कर कर अगर जो करना था किया होता तो, कितना लाभ पा लेता हूँ। मैं उस शरीर से ध्यान साधना करते हो तो? किताबें पड़े हो तो? आध्यात्मिक संदेशों सुनते हो तो? उस से सेवा करवाते तो? मैं कितने लाभ पाए होते थे, तब सोचता होगा। उन लाभों पाने के लिए यह शरीर लिया हूँ, यह बात तब समझेंगे।

लेकिन इस स्थाई तक पहुंचने वाला, इस ज्ञान को प्राप्त करने वाला, इस शरीर और संसार तत्कालीन है का समझ आता है। उनके ऊपर आशक्ति नहीं रहता है। सिनेमा या पार्टियों में या समय वृधा नहीं करेगा।

इसलिए इस स्थिति तक पहुंचने वाले उन सब को पार करता है। ऐसे आप भी यह सब पार करेंगे, तब आप इस स्थिति में पहुंच गए हैं! आपको भी 'ब्र्म्ह विध्वर' बुला सकते हैं।

ऐसी जगह हमें फंसने से बचेगा गुरु का सहायता। कारण गुरु यह सारे विषयों को हमें याद दिलाता है। आप कहां गिर जाएंगे? कहां फिसल गया है? यह सब को चेतावनी देता रहता है।

सहज बात है कि शिष्य को गुरु का कहने वाले बातें पसंद नहीं करता है। क्योंकि? एक महान मार्ग में आकर, यात्रा करते हुए..... उन्नति प्राप्त करते वक्त अनजाने में कुछ गलतियां करने से, निषिद्ध कर्मो करने से, वह पतन हो जाएगा। ऐसे पतन ना होने केलिए, गुरु को कहने पर भी उन्हें समझ नहीं आता है। लेकिन अपना धर्म है गुरु को बताना। लेकिन वह ऐसे क्यों कहता है? ऐसे सोचने वाले भी है। बल्कि गुरु हमें सहायता कर रहे हैं। बल्कि हम पतन ना होने के लिए कहते हैं, ऐसे सोचते नहीं है। लेकिन गुरु क्या कर सकता है? सिर्फ बताना ही उनका धर्म है।

बड़े लोग कहते हैं ना? आम के पेड़ में बहुत फूल होते हैं, कुछ ही बड़े होते हैं और कुछ ही बहुत बड़े होते हैं, और उनमें से कुछ ही फल बन जाते हैं। मतलब बीच में कितने गिर जाते हैं? अगर सारे फूल फल बन जाएंगे तो क्या पेड़ खड़ा होगा? ऐसे ही एक-एक स्तर पर कुछ लोग निकल जाते हैं।

लेकिन उस गुरु का सहायता लेकर, अगर कहीं भी गलत कदम नहीं करते होंगे, तब 10 जन्मों का हासिल करने वाले ज्ञान इसी जन्म में प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए उस गुरु का संदेशों सुनता ही रहना चाहिए।

इसलिए जानिए कि गुरु का सहायता बहुत ही आवश्यक है। मेहर बाबा जैसे लोग कहने वाला विषय सामान्य नहीं हो सकता है।

6. पदार्थ भावना ।

अब हम 6-वां भूमिका 'पदार्थ भावना' के बारे में जानते हैं।

पदार्थ भावना का मतलब अपना दिव्य चक्षु को पूर्णतया इस्तेमाल करने वाले हैं। हम पांचवा भूमिका में असंशक्ति कहकर, वहां पर दिव्यचक्षु को प्राप्त करने का अवसर है को कहा था। यहां पर उस दिव्यचक्षु को पूर्णतया इस्तेमाल करने वाला ही 6-वां भूमिका को पहुंचने वाले हैं।

साथ में हर शब्द के अर्थ में, हर वस्तु का भाव में प्रत्यक्ष में रहने वाला है। इन लोगों को बड़ों ने 'ब्र्स्मा विद्वरीया' कहते हैं। यही है 'सिद्धत्व स्थिति'। इसी को 'सविकल्प समाधि स्थिति' भी कहते हैं। 'सविकल्प समाधि स्थिति' का मतलब बहुत समाधान मिलने के बाद भी थोड़ा संशयों रहने वाला स्थिति।

दिव्यचक्षु को पूर्णतया इस्तेमाल करने वाला इस 6-वां भूमिका में आते हैं। हम एक और विषय कह चुके हैं। क्या है? कि इस जन्म में कुछ लोगों को दिव्य चक्षु हो सकता है, नहीं भी हो सकता है। लेकिन पिछले जन्म में दिव्य चक्षु उत्तेजित होकर उस जन्म में वह अनुभवों पाकर, इस जन्म में नए अनुभवों के लिए जन्म लिए होंगे। इसलिए तीसरा आंख बहुत जरूरी नहीं है। उसके लिए इंतजार नहीं करना है। मुझे अभी तक उत्तेजित नहीं हुआ करके दुख नहीं होना है। बाकी विषयों कैसे हैं? ज्ञान कैसा है? यह सब देखना है।

इस विषय के बारे में भी थोड़ा जानते हैं। आत्मज्ञान प्राप्त करने वालों का प्रवर्तन कैसा रहता है? वह जानकर अगर हम ऐसी स्थिति में है तो हम बहुत महान स्थिति में गए हैं। अगर कोई कमियां हैं उनको ठीक भी कर सकते हैं, वह गलत नहीं है।

देखिए अगर हमें मेहर बाबा का संदेश को समझना है तो एक-एक शब्द का अर्थ जानना चाहिए। तभी हम मेहर बाबा का संदेश समझ सकते हैं।

पत्री जी हर एक शब्द का अर्थ जानने वाला है। इसलिए उनके तरह हर एक शब्द का अर्थ जानने का प्रयत्न करना चाहिए। वह हर एक शब्द का

अर्थ बताते थे। अगर शब्द समझ सकते हैं तब पूरा विषय क्यों नहीं समझेंगे?

इसलिए यहां इस स्थिति पहुंचने वाले ब्र्म्मा विद्यारीय को हर शब्द का अर्थ जानता है। जीसस ने कहा है कि, "To start with the word" । इसका मतलब कोई भी, 'शब्द' से सीखना चाहिए ।

क्योंकि उस वाक्य में शब्द का अर्थ नहीं मालूम होगा, तब वाक्य नहीं समझेंगे। वाक्य नहीं समझेंगे तब अनुच्छेद नहीं समझेंगे। तब वह अनुच्छेद नहीं समझेंगे और उस पन्ना नहीं समझेंगे, तब उस विषय को नहीं समझते हैं, तब पूरा किताब ही नहीं समझे हैं।

अभी नया युग के किताबें किसी को ना समझने पर, अपना अपना भाषण दे रहे हैं। इसलिए हमारे पीएसएसएम समिति में भ्रांति में रहते हैं। न ही पढ़ने वालों को और सुनने वालों को भी नहीं समझ पाते, और सोचते हैं कि वह बहुत उच्चतम विषय हैं।

जो लिखा है हमारा प्रांतवासी नहीं है, हमारा भाषा नहीं समझने वाला होने से, उन शब्दों का अर्थ और अंतरार्थ, समझना थोड़ा मुश्किल होता है।

इसलिए पत्री जी कहते हैं कि अगर भागवत गीता समझना है तो पांडित्य काफी नहीं है, उन्हें ध्यान भी करने वाला होना चाहिए, तभी भागवत गीता का सही अर्थ बता सकता है।

इसलिए आप जो भी किताब पढ़ रहे हैं जल्दी में पढ़ना नहीं। हर एक शब्द का अर्थ जानकर आगे बढ़ना चाहिए, नही तो आप कुछ नहीं समझेंगे।

इसलिए मैं कहता हूँ कि जब आध्यात्मिक किताबें पढ़ते हैं, समय लेना है। कभी-कभी एक ही अनुच्छेद में ही समय लग जाता है। देखिए अगर आप ही नहीं समझेंगे तब दूसरों को कैसे समझाएंगे? बताना प्रधान नहीं है, उसको समझाना मुख्य है। क्योंकि जब सुनने वाला को समझ आएगा, तभी आचरण करेगा नहीं तो सुनकर छोड़ देगा। तब बताने से क्या फायदा? सोचिए ?

अभी आप देखिए पत्री जी ने तुलसी दलम करके एक किताब लिखे हैं। कई ग्रंथों के सारांशों को एक एक पन्ना मे लिखा है। ऐसे बहुत सारे ग्रन्थों का सारांश उस किताब में लिखा है। उस किताब में विषयों को सीखने से आपका ज्ञान बढ़ता है।

ऐसे हर एक विषय को अवगाहन करने वाला, कोई भी विषय दूसरों को समझाने वाला, कोई भी विषय को अर्थपूर्ण बात करने वालों को 'ब्र्म्ह विद्वरीय' कहते हैं।

इस स्थाई तक पहुंचाने वालों को सिद्दत्व और सिद्धियां पाने वाले कहते हैं। पहले सिद्धत्व आना चाहिए, मतलब अंतिम स्थिति के पहले स्थिति। इसलिए बिना गुरु का सहायता, इस 6-वां भूमिका को पार करना बहुत मुश्किल है, कहते हैं मेहर बाबा जी।

यहां पर साधना बहुत कठोर होना, और श्रद्धा पूर्वक होना चाहिए। संसार पर, और भोगो पर अनाशक्ति रहना चाहिए, ज्ञान पर, आत्मा पर आशक्ति ज्यादा होना चाहिए। तभी ऐसी स्थिति को पहुंच सकते हैं। नहीं तो मध्य भूमिका में रह जाते हैं।

देखिए पंडित लोग बहुत अच्छी तरह वर्णन करते हैं। बहुत लोगों आकर्षित होते हैं। लेकिन उस विद्या मोक्ष नहीं दे सकता है। इसलिए पत्री जी कहते हैं कि जितना भी बड़ा पंडित हो, वह एक ध्यानी के तुलना में कम ही है। ध्यान करने वाला भी इस स्थिति तक पहुंचना मामूली बात नहीं है ।

क्योंकि ? आप 5-वां भूमिका में आने से 6-वां भूमिका समझ पाएंगे। अगर आप 2-वां भूमिका में रहकर इस 6-वां भूमिका के बारे में कैसे समझेंगे?

इसी को सविकल्प समाधि भी कहते हैं। सविकल्प समाधि में हर एक शब्द का अर्थ जान सकते हैं, दिव्य चक्षु इस्तेमाल कर सकते हैं।

पत्री जी क्या कहते हैं? कि सविकल्प समाधि में ही में जब की बहुत समाधान मिलेंगे, तब भी थोड़ा और संशयाओं रह जाते हैं।

कारण यही है कि सृष्टि में नहीं दिखने वाले लोकों बहुत हैं, नहीं दिखने वाले मास्टर्स बहुत हैं, नहीं दिखने वाले विषयों बहुत हैं, उनके बारे में पूरी तरह कैसे जानेंगे? इसलिए यहां इस स्थिति तक पहुंचने पर भी बहुत सारे विषयों को जानना बाकी है।

समाधि स्थित मतलब मनस शून्य होना, या तो मनस पूर्णतया आत्मा में लीन होना। एक प्रकार से मैं और परमात्मा अलग नहीं है, दोनों एक है का अनुभव करना। 'अहम ब्र्स्मास्मि' का अनुभव करना।

इसी को 'जीव ब्र्स्मैक्यम', कहते हैं। मतलब जीव और ब्र्स्म एक है का अनुभव पाना।

जब इस स्थिति में आते हैं प्रवर्तन पूरी तरह से बदल जाता है। अगर सब एक ही है तब किससे हम असूय होगा ? या विमर्श करेंगे ?

इसलिए बहुत महान स्थिति पहुंचे हैं । यहां पर मनस आत्मा में लीन हो गया है।

इसलिए यहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल है, इसलिए गुरु का सहायता जरूरी है। क्योंकि ? गुरु कोई भी विषय को सीधे और कठिन शब्दों में बताएंगे। बहुत लोगों को दुख हो सकता है, लेकिन अगर आगे बढ़ाना है तो उसको समझ कर उनके हिसाब से प्रवर्तन होना चाहिए।

इस स्थिति पहुंचने वाले तपो लोक पहुंचते हैं। लेकिन सत्य लोक नहीं पहुंच सकते हैं। अगला भूमिका में जाने से ही सत्य लोक पहुंचेंगे।

सत्य लोक से पहले वाला भूमिका 'पदार्थ भावना' कहते हैं। इसके बाद 'तुरीयम' कहते हैं। इसलिए तुरीयम क्या है? इस भूमिका में कैसे स्थिति होता है आगे जानते हैं।

7. तुरीयम ।

मेहर बाबा आगे क्या कह रहा हैं? जो कोई इस आध्यात्मिक मार्ग में आया है उनके लिए गुरु का सहायता बहुत ही आवश्यक है। और जानना है कि अगर एक साधक को किसी भी विद्या में विशेषज्ञ बनना है तो, मतलब परिपूर्ण होना है तो, गुरु का सहायता बहुत जरूरी है। कारण गुरु ने इस मार्ग को विस्तार से जानते हैं, बारीक से जानते हैं, और बहुत अध्ययन भी किए हैं, और ऐसे गुरु का सहायता मिलने पर एक साधक जो सोचता है, आसान से वह हासिल कर सकता है।

मगर गुरु कौन है मतलब जो भी आपका अज्ञानता निकलता है और ज्ञान देते हैं, वही गुरु है। ऐसे गुरु का सहायता बिना, एक साधक मध्य भूमिका में रुकता है, और वैसे लोग 6-वां भूमिका कैसे पार करेंगे?

'तुरीय स्थिति' मानव का पूर्ण विकास स्थिति, परिपूर्ण स्थिति। सिद्धा, बुद्धा का स्थिति। सबको योगियों में, सिद्धों में, बुद्धों में बनाने को, मतलब तैयार करने का दृढ़ निश्चय से, इस परिश्रम में पूरी तरह निमग्न होने वाले को ही बुद्धा कहते हैं। इसी स्थिति को 'सहस्त्र दल कमलम' मतलब 'हजार सिरों का सांप' मतलब 'सहस्रार स्थिति' कहते हैं। इस स्थिति पाने वाले एक-एक को योगी बनाने से, एक-एक सहस्त्र दल कमल में एक-एक पत्ता खुल जाता है। उन्हीं को 'ब्र्स्म विद्वरिष्ठ' कहते हैं।

यह बात ना समझ कर कुछ लोग चक्रों का उत्तेजित करने वाला ध्यान करवाते हैं। वह लोग कहते हैं कि ध्यान में बिठाकर पहला दिन आपका मूलाधार चक्र उत्तेजित हो गया है करके सोचो। वह ऐसे होने जैसा फील होते हैं। अगला दिन स्वादिष्टान चक्र उत्तेजित हो गया करके सोचो। वह लोग भी ऐसे फील होते हैं। बाद में मणि पूरक चक्र को उत्तेजित हो गया करके सोचो। फिर यह लोग ऐसे ही फील होते हैं।

ऐसे करके एक दिन अनाहत चक्र, एक दिन विशुद्ध चक्र, एक दिन

आज्ञा चक्र, आखिरी दिन में सहस्रार चक्र उत्तेजित हो गया करके सोचने को कहते हैं। यह लोग भी ऐसे फील होते हैं। और कहते हैं कि वह परिपूर्ण स्थिति पहुंच गए हैं करके। सोचो! यह लोग भी ऐसे फील हो जाते हैं।

ध्यान खत्म होने के बाद अपनी-अपनी अनुभवों को बताने को कहते हैं। तब यह लोग मेरा सहस्त्र उत्तेजित हो गया है, पता नहीं मेरे सर को ऊपर खुजली हुआ है करके एक, मुझे ऐसे घूम रहा था करके, ऐसे कई प्रकार के कहते हैं।

तब वह मास्टर आपको सहस्रार उत्तेजित हो गया है न ? यह लोग गर्व महसूस करते हैं। इसके अलावा सोचते नहीं है।

क्योंकि पत्री जी ने कहा है कि अगर इन साथ चक्रों को उत्तेजित होना है तब किसी को भी कम से कम 400 से 500 जन्मों लगता है। मगर यह लोग 7 दिन में ही ध्यान में बिठाकर उत्तेजित कर रहे हैं। तब क्या? सारे दुनिया के लोग एक ही हफ्ता में मोक्ष पा लेते हैं ना ? ज़रा सोचिए कैसे पाएंगे ? इन गाइडिंग मास्टर्स लोगों को पागल बना रहे हैं।

याद रखिए यहां पर सोचने से नहीं, कोई भी सहज स्थिति में आना है। ऐसे सहज स्थित केवल विशेष कृषि से ही होता है, सोचने से ,या भावनाओं से कैसे हो जाएगा? पता नहीं ऐसे मास्टर्स साधकों को पागल बना रहे हैं। मगर चक्रों को उत्तेजित करना इतना आसान नहीं है। कम से कम एक चक्र स्थिति को पार करने में 100 से 150 जन्मों लग जाते हैं, पत्री जी ने कहा है।

मूलाधार से बाहर निकलना है तो तमोगुण से बाहर निकलना है। स्वादिष्ठान से निकलना है तो रजोगुण से बाहर निकलना है। मनी पूरक चक्र से निकलना है तो सात्विक गुण में से बाहर निकलना है। विशेष रूप से कृषि कर कर धीरे से अनाहत, विशुद्ध स्थिति में से बाहर निकलना है तो शुद्ध सात्विक से बाहर निकलना है। आखिरी चक्र आज्ञा चक्र में आने के लिए निर्गुण स्थिति को पाना है। वहां से सहस्रार स्थिति पहुंचना है तो तुरीय स्थिति

पाना है।

शुरुआत स्थितियों में ज्यादा जन्मों लगता है। बाद में 50 जन्मों में उन्नति बढ़ता रहता है। अभी हमारी आशक्ति, हमारा साधना, हमारा श्रद्धा, उनके हिसाब से हम लोग 350 जन्मों पार कर चुके हैं, पहले बता चुके हैं।

यहां पर आप कौन हैं नहीं, स्त्री या पुरुष, धनवान या गरीब। कोई धर्म से, कोई जाति से, किसी मत से हो, कोई भी प्रान्त से हो सकता है, जरूर आप लोग 350 जन्मों पार कर चुके हैं। आप 350 से 400 के बीच में है। आपका पति या पत्नी, या बच्चों, बंधु गण, या माता-पिता, वह लोग उस स्थिति में नहीं होंगे, लेकिन आप उस स्थिति में है। मगर ऐसे परिवार में क्यों जन्म लिए हैं? मतलब उस तरह के अनुभवों के लिए ही है। आपको कुछ अनुभवों का बाकी था। इसलिए उस परिवार और प्रांत में जन्म लिए हैं ।

हमारे मधु को ही देखो, वह ताड़ी निकालने वाले परिवार में जन्म लिया है। लेकिन वहां नहीं रह पाए क्योंकि वह उनका करने वाला काम नहीं था। हैदराबाद पहुंच गए थे, पहने हुए कपड़े के साथ आ गए थे। कारण उनका चाहिए था ज्ञान। वह मेरे परिचय के बाद उन्हें मिला। तब से वह नहीं छोड़ा है। इसी प्रकार आप सब लोगों का अलग-अलग परिस्थितियों है। यह आपका ज्ञान बढ़ने से समझेंगे।

आप सोचते होंगे कि मैं इस मार्ग में आया हूँ, अच्छा होता तो मेरा पति या पत्नी भी इस मार्ग में आ जाते हैं। लेकिन वह लोग कम जन्मों में है। उनको और कुछ जन्मो लगेंगे।

अभी मैं या मेरी मैडम के घर वालों को किसी ने भी ध्यान में नहीं आए हैं। वह कहते हैं कि आपका मार्ग सही है, लेकिन हम नहीं कर पा रहे हैं, बैठ नहीं पा रहे हैं। यह ध्यान और ज्ञान उन्हें रुचि नहीं लगा।

इसलिए इस तुरीयम के बारे में गहराई में जानना चाहिए। इस स्तर तक पहुंचना मामूली बात नहीं है। तुरीयम का मतलब आखिरी स्थिति, पराकाष्ठा।

400 से 500 जन्मों लेना पड़ता है।

पत्री जी जब हमें यह विषय बता रहे थे मैं सोचता रहता था कि 500 जन्मों किस लिए? इसी जन्म में नहीं पा सकेंगे क्या? लेकिन जब देखेंगे इस मार्ग में बहुत सारे अवरोधों हैं, रुकावटें हैं, प्रलोभनों है, जिम्मेदारियां हैं, परीक्षा हैं, माया भी है। ऐसी परिस्थितियों से निकलना इतना आसान है क्या ?

इसलिए देखिए जब किसी परिवार लोगों के साथ, या बंधु गण के साथ, या दोस्तों के साथ, ऐसी बातों करने पर हमें पागल समझते हैं। वह लोग कुछ व्यापारों के बारे में बात करते हैं, पैसों के बारे में बात करते हैं, दूसरे लोगों के बारे में बात करते हैं, अपने महानताओं के बारे में बात करते रहते हैं।

अगर हम वहां बैठेंगे हम भी धीरे-धीरे आध्यात्मिकता से दूर हो जाएंगे। मैंने वह देखा, इसलिए मैं उन व्यवहारों से दूर रहता हूँ। वहां जाना भी बेकार है।

प्रापंचिक व्यवहारों में रहने वाले के साथ रहेंगे तो कुछ ही दिनों में हमारा ध्यान स्थिति खो जाएंगे, और वापस इस स्थिति में पहुंचने के लिए बहुत दिन लगेंगे।

इसलिए देखिए कि अगर आप भीमावरम क्लास में और ज़ूम क्लास में नहीं आएंगे, तो फिर से बहुत दिनों तक नहीं आ पाएंगे। बहुत दिन बाद समझेंगे कि आप बिखर गए हैं। और तब फिर से ज़ूम में आएंगे।

कुछ लोग, इस मार्ग को छोड़ने वाले भी हैं। इसी को माया में गिरना कहते हैं। इसलिए जितना भी हम सोचें कि हमें उन्नति प्राप्त करना हैं, इस माया प्रपंच, दुनिया हमें पीछे खींचता रहता है। इसलिए कोई भी इतने सारे जन्म लेते हैं, नहीं तो इतने जन्मों की क्या जरूरत है? इसलिए मेहर बाबा जी कहते हैं कि गुरु का सहायता जरूरी है।

तुरीयम का मतलब मानव का पूर्ण विकास स्थिति, मतलब परिपूर्ण

स्थिति पहुंचने वाले स्थिति है। सिद्धा और बुद्धा का स्थिति है। सबको योगियों, सिद्धों और बुद्धाओं बनाने का दृढ़ निश्चय करने वाला, उसी में परिश्रम करने वाला स्थिति है। उन्हीं को बुद्धा कहते हैं।

इसी को सहस्त्रदल कमल या हजार सिरों का सांप भी कहते हैं। याद रखिए मानव का पूर्ण विकास स्थिति का मतलब क्या? किसी भी मानव को जन्म लेने से जन्म रहित स्थिति को पहुंचना है तो पूर्ण ज्ञान पाना चाहिए।

थोड़ा सा ज्ञान पाने से नहीं चलेगा, पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वही मानव का जीवन लक्ष्य है। एक प्रकार से उसी को 'आत्म साक्षारता' कहते हैं, या मोक्ष कहते हैं। कुछ भी कह सकते हैं। निर्वाण या पूर्णतया स्थिति, या सह सृष्टि करता। उस स्थिति ही तुरीयम है। इस स्थिति से पहले उसको सिद्धा कहते हैं। मानव 6-वां भूमिका में सिद्दत्व पाता है।

सिद्दत्व का मतलब सिद्धियां को पाने वाला, मतलब अतींद्रिय शक्तियों पाना, मतलब कुछ महत्व पाने वाले। ऐसे सिद्धियां ही ने हनुमान जी भी पाए हैं ।

अष्ट सिद्धियां कहते हैं मतलब अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकाम्यम, ईशत्वं, वशित्वं, जैसे पाने पर 6-वां भूमिका 'पदार्थ भावना' है। तुरीयम का मतलब परिपूर्ण स्थिति। जब यह परिपूर्ण स्थिति पहुंचते हैं, वह सिद्धा, बुद्धा बन जाता है।

इसीलिए पत्री जी एक संदर्भ में कहा था कि सबको बुद्धाओं बनना ही मेरा आकांक्षा है। उसके हिसाब से सबको वह ज्ञान दिया है।

कोई भी जितना भी महान हो पृथ्वी पर शाश्वत नहीं है। अगर देखेंगे ना तो श्री कृष्ण जी, या श्री राम जी, या बुद्ध भगवान, या जीसस, या मोहम्मद, या श्री शंकराचार्य जी, या गुरु नानक, कोई नहीं है। यह सब लोग अपना अपना काम कर कर जो संदेशों देना, देकर कुछ लोगों को अपनी तरह बना

कर चले गए हैं।

हम भी यही काम कर रहे हैं। सबको योगी बनाने का प्रयत्न में है। हर दिन घंटों तक योग स्थिति में बैठने का आदत कर रहे हैं। उस योगी का अगला स्थिति है सिद्धा बनना और सिद्दत्व पाना है।

परिपूर्ण स्थिति पाने के लिए, और बुद्धा बनने के लिए, सिद्धियां का आवश्यकता है। उन सिद्धियां को पाने से पहले योगी बनना है। उसके लिए ध्यान साधना करना चाहिए।

उस योगी एक जगह नहीं बैठता है, वह घूमता रहता है, और जहां उन्हें अवसर मिलता है वहां सबमें बदलाव लाने का प्रयत्न करता रहता है। उस कृषि करने वालों को ही बुद्धा कहते हैं।

उस पूर्ण स्थिति, और सहस्रार स्थित पाने का मतलब यही है। क्योंकि? उन्हें मालूम है कि एक-एक को योगी बनाने से सहस्र दल कमल में एक-एक पत्ता खुलता रहता है। ऐसे प्रयत्न करने से वह अनंत बार खुलते रहते हैं। ऐसे सबको योगी बनाना, एक योगी का धर्म है।

कोई भी पृथ्वी पर आकर परिपूर्ण स्थिति पाने पर आराम से बैठता नहीं है। सबको उनके तरह बनाने का कोशिश करता रहता है। मतलब ब्र्म्ह ज्ञान पाने वाला सबको ब्र्म्ह ज्ञान प्राप्त करने में तपन होता है।

कोई भी अच्छे विषयों को सिर्फ अकेला अनुभव करने में संतोष नहीं होता, बल्कि सबको बांटने में ही संतोष मिलता है। इसी प्रकार अद्वैत अनुभूति मतलब ब्र्म्हा और में अलग नहीं हूँ, दोनों एक ही है का अनुभूति, उसी को जीव ब्र्म्हैक्यम कहते हैं।

व्यक्तिगत रूप से अगर उन्हें मुक्ति पाने से दुनिया को क्या फायदा ? मतलब कुछ भी नहीं है। इसलिए उस स्थिति पहुंचने वाले लोग इस शरीर को छोड़ने से पहले सर्व प्रपंच को मुक्ति दिलाने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्हें

मालूम है की तभी उनको सत्य लोक में शाश्वत स्थान मिलेगा।

सच में जब ऐसे करते रहते हैं उसमें महादानंद का कोई अवदों नहीं है, कहते हैं स्वामी विवेकानंद जी, अपने संपूर्ण ग्रंथ में 7-वां भाग में 162 पन्ने में एक शिष्य को बोध किए हैं। इसीलिए वह भी, पत्री जी भी दुनिया घूमे हैं। वह ही नहीं, श्री शंकराचार्य जी, बुद्धा और बहुत लोग भी घूमे हैं। उन लोगों का आनंद का अवदों नहीं है।

अगर सच में आपको विवेकानंद का बातें समझ गए हैं, आप भी यह प्रयत्न करिए। आप सब भी महान बनेंगे। इसलिए आपको जो भी ज्ञान है, सबको बोध करने का प्रयत्न करो। अपने आप को देखिए, उस पूरा दिन कितना आनंद अनुभव करते होंगे।

इसलिए मैं और अम्मा घर में नहीं रह पाते हैं। घर में कोई कमी नहीं है, सब कुछ है, लेकिन वह इतना आनंद नहीं दे पाते हैं। जितना भी कष्ट है उसमें आनंद जो मिलता है, घर में रहने से नहीं मिलेगा।

इसलिए ब्र्म्ह ज्ञान पाने वाले उसे बांटना चाहिए, बल्कि छुपाना नहीं है। मुक्ति पाने वाला कम से कम कुछ लोगों को अपनी तरह बनाने को कृषि करना चाहिए। यह सृष्टि का धर्म है, नियम है। इसी को 'तीर्थंकर गोत्र बंधन' पत्री जी ने तुलसी दलम किताब में कहा है।

इसलिए जब भी आप अश्रद्धा रहते हैं..... तभी आप जब अवसर को छोड़ रहे हो, मैं चेतावनी देता रहता हूँ। क्योंकि? आप कितना नष्ट हो रहे हैं आपको मालूम नहीं है। आपके अंदर का अश्रद्धा से, गलतियों से, आप उन्नति नहीं पा रहे हैं। इसलिए गुरु का जिम्मेदारी के साथ मैं आपको चेतावनी दे रहा हूँ।

बहुत लोग क्या सोचते हैं? संसार को, कमाई को, जिम्मेदारियां को, सब कुछ छोड़ना कैसे ? लेकिन कुछ भी छोड़ने का जरूरत नहीं है, सब कुछ कर सकते हो। लेकिन आप आत्मा है का याद दिलाते रहना है और श्रद्धा रखो। जो

भी खाली समय है दृढ़ निश्चय के साथ कृषि करते रहना और प्रकृति ही आपको अवसर देता रहता है। आपके अंदर का तपन, और श्रद्धा देखकर पूर्ण स्थिति को पहुंचाने का अवसरों को प्रकृति आपको दिलाता है। मतलब आपका संसार में, परिवार में, आपका जो भी रुकावटें हैं, अवरोधों हैं, यह सब धीरे-धीरे निकल जाता है। लेकिन अगर आपके अंदर तपन नहीं है तो सृष्टि कुछ भी जबरदस्ती नहीं करेगा।

आपकी इच्छा अगर आपको सुख भोगना है तो वैसे करो, संसार में रहना है तो सही, बच्चों के साथ खुशी रहो, आपको बेटा को प्रायोजित बनना, आपकी बेटी को देखना देखो, पति या पत्नी के साथ मौज में रहना है तो भी सही, आप धन प्राप्त कर कर महान बनना है तो भी सही, कौन मना करता है? सृष्टि में कुछ भी जबरदस्ती नहीं है।

सृष्टि में हर एक को स्वेच्छा है, अपने इच्छा अनुसार जीने का हक प्रकृति देती है। किसी को किसी भी हालत में जबरदस्ती नहीं है।

हम लोग मरने के बाद का जीवन के बारे में बात कर चुके हैं। मरने के बाद शरीर से आत्मा निकलने के बाद आत्मा को लेने के लिए दो सहायक आते हैं। हम यह बात कर चुके हैं। वह सहायकों ने ऊपर लोकों में चलने को कहते हैं।

लेकिन उनको अपनी पत्नी पर, संसार पर, बच्चों पर, धन पर, संपत्ति पर, ममता रखकर, उन सब को छोड़ने को तैयार नहीं रहता है। जितना भी सहायकों कोशिश करते हैं वह नहीं जाता है। तीन दिन तक देखते हैं, 7 दिन देखते हैं, और आखिर में 11 दिन तक देखते हैं। तब उनसे पूछते हैं आ रहे हैं? या नहीं? हम जा रहे हैं। लेकिन यह आदमी सीधा मना करता है ।

सृष्टि में कुछ भी जबरदस्ती नहीं है, इसलिए सहायकों चले जाते हैं। यह आदमी यहीं रहकर एक प्रेतात्मा या भूत बन जाता है। तब वह क्या करेगा? पत्नी के पास जाकर रोने से मना करता है, पत्नी को कुछ मालूम नहीं

होता है। इनको कोई सुनने वाला नहीं होता क्योंकि उनको कोई सुन नहीं सकते हैं। तब वह बच्चों के पास जाता है, उनको भी सुनाई नहीं देता है, और अपने काम करते रहते हैं। बाद में अपने ज़मीनों देखने जाते हैं, और ऐसे घूमता रहता है।

उसको कोई भी ध्यान नहीं देता है, अपने-अपने काम में लगे रहते हैं। इनको कुछ समझ नहीं आता है और व्याकुल में रहता है।

कुछ दिनों बाद सब लोग अपना काम करते रहते हैं, और इनको भूल जाते हैं। तब यह क्या कर सकता है? कहीं पुलों पर, या पेड़ों पर, या बड़े बिल्डिंगों पर बैठकर आते-जाते लोगों को देखता रहता है।

क्या करेगा? ऊपर लोकों में जाना है तो कैसे जाएगा? वह सहायकों चले गए हैं। आत्मा द्वारों भी बंद हो गए हैं। कोई रास्ता नहीं है। ऐसे बहुत साल गुज़र जाते हैं और प्रेतात्मा होकर रह जाते हैं। तब बोर(ऊब) हो जाता है। तब सोचेंगे कि मेरा जीवन ऐसे कहीं का नहीं रहा है करके दुखित होता है। ऐसे सोचता है कि तभी मैं उनके साथ चले जाता तो अच्छा होता ।

देखिए जब जीवित हैं अगर थोड़ा सा भी आत्मज्ञान प्राप्त करते, तब ऐसे प्रेतात्मा बनकर सैकडों सालों को बर्बाद नहीं करते हैं।

पत्री जी कहते हैं कि समय बहुत महत्त्व है, 1 मिनट भी बेकार नहीं करना है। अगर ज्ञान नहीं पाया है तब न केवल 1 मिनट, पूरा जन्म ही बेकार हो जाता है। देखिए कितना बदनसीब वाला होगा। इन सैकडों सालों में कितने जन्म ले पाते थे ना? थोड़ा ज्ञान बढ़ाकर, आत्मा को थोड़ा उन्नति कर सकता है ना? अपने लक्ष्य के और पास होता है ना? लेकिन कितना समय बर्बाद कर दिया है ना ?

पत्री जी के साथ परिचय होने के बाद यही बात मैंने समझा। इसलिए समय को बर्बाद नहीं करता हूं। बच्चों को बाहर, अपने घरों को, भेज दिया और हम अपने काम कर रहे हैं। जबसे मैं आत्मा हूं का अवगाहन आया है, आत्मा

का लाभ ही सोच रहे हैं। जब तक यह शरीर रहेगा, इसी आत्मा के लाभ के लिए उपयोग करना है, का विषय समझा हूं।

आप जीवित है सिर्फ और सिर्फ अपने आत्मा का उन्नति के लिए ही है, ना अपने बंधु गण के लिए, या दोस्तों के लिए, या परिवार के लिए, ना संसार के लिए।

मुझे और मैडम को एक ही बार करोना आई थी, हमें हैदराबाद लेकर गए थे। हमें मालूम नहीं कितना समय लगेगा वापस आने में? इसलिए कपड़े आदि पैक कर रहे थे।

तब मुझे लगा कि अभी हम जा रहे हैं, क्या पता यही आखरी बार है। फिर आएंगे या नहीं, वही से वही चला जा सकते हैं। तब लगा कि यह सब पैक कर रहे हैं, हमें उन्हें फिर देखेंगे क्या? न केवल घर में समान, संपत्तियां, जमीनों है, फिर से देखेंगे या नहीं ? उनके साथ संबंध खत्म हो गया क्या ? मुझे लगा था कि ऐसे ही हम चले जाएंगे क्या।

बाद में मुझे याद आया की पत्री जी कहते हैं कि अगर आपका यहां काम अधूरी है, तब आप नहीं जाएंगे जितना भी चाहो। अगर आपका यहा काम खत्म होने पर, तो आप नहीं रहेंगे।

इसलिए सबके लिए तैयार होकर ही चले गए थे। तब मैंने सोचा कौन नहीं जा रहा है? कितने लोग नहीं चले गए हैं? कोई यहां शाश्वत के लिए नहीं रहेगा? सबको जाना ही है ना? जाने से पहले आप आत्मा है, आत्मा के लाभ के लिए, आत्मा का उन्नति के लिए, आपको क्या करना चाहिए, आप कर रहे हो? या नहीं? यह सोचना है।

सब लोग कहते हैं कि यह पाया हूँ, वह हासिल किया हूँ। लेकिन वह सब किसको चाहिए? जो नहीं रहने वाले चीज कितना भी पाए हैं, उस से क्या फायदा? जो रहेगा उनके बारे में सोचना है।

देखिए जो यात्रा में जाना है, वह तीन दिन पहले ही बक्सा को सजाकर रखता है। इसी तरह हम भी किसी न किसी दिन चले जाएंगे, तो उसके लिए तैयारी होना है कि नहीं? यहां तो शाश्वत नहीं रहेंगे ना? लेकिन हमारा जीवन यात्रा कब खत्म होगा क्या मालूम।

देखिए बिना कुछ पैक करके कोई यात्रा पर जाता है क्या? देखिए कितना मुसीबत होगा? इसी तरह अगर जीवन यात्रा में भी अगर पैक नहीं करके निकल गया हो, तो कितना गड़बड़ होगा? पैक करना मतलब क्या है? ऊपर लोक में जाने के बाद, आत्मा को लाभ पहुंचाने वाले काम किए हुए होना। तब ऊपर जाने पर भी नष्ट नहीं होगा, सिर्फ लाभ ही होगा। ऊपर लोकों में पहुंचता है।

इसलिए अगर आप सब पैक कर चुके हैं तो, निश्चिंत रहकर ऊपर लोकों को सहायकों के साथ चले जाते हैं। इसलिए पैक करके तैयार रहना है।

नहीं तो शरीर छोड़ने के बाद बहुत मुसीबत में आएगा, बहुत नष्ट होगा। इसलिए यह सब याद रखना है।

इसलिए 'तुरीयम' के बारे में और थोड़ा जानते हैं। तुरीयम का मतलब सर्व सामान्य जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं को पार करने बाद, निर्विकल्प समाधि पहुंचने वाला स्थिति, कह सकते हैं। मतलब पूरे समाधान मिलने वाला स्थिति है। मतलब कोई संदेह या संशय नहीं होने वाला स्थिति, यह कह सकते हैं।

जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्थाओं के बारे में थोड़ा जान लेते हैं।

1.जागृत अवस्था में शरीर और इंद्रियों काम करते हैं।

2.स्वप्न अवस्था में शरीर और इंद्रियों काम नहीं करते हैं, लेकिन मनस काम करता रहता है।

मानव जब सोता है मनस अपने जागृत अवस्था वाले विषयों को

कल्पनाएं करता रहता है। उन्हीं को हम सपने कहते हैं। क्योंकि वह स्वप्न अवस्था में है उनको स्वप्न कहते हैं।

3. सुषुप्ति अवस्था में मनस बिल्कुल काम नहीं करता है। सोते वक्त सुषुप्ति अवस्था जैसा है वैसा ही ध्यान करने वालों के 'ध्यान स्थिति' है। दोनों एक ही है, सिर्फ सुषुप्ति में जागरूकता नहीं होता, और ध्यान में जागरूकता रहता है।

इन तीनों स्थितियों को पार करने के बाद 'तुरीयम' कहते हैं। 'तुरीयम' में मनस ही नहीं रहता है, मतलब शून्य स्थिति होता है।

देखिए ध्यान में हम कह रहे हैं कि तीन स्थितियाँ है। पहले स्थिति में चंचल मनस निश्चल होता है। दूसरा स्थिति में निश्चल मनस निर्मल होता है। और तीसरा स्थिति में निर्मल मनस शून्य होता है। इसी को 'तुरीयम' कहते हैं। इस 'तुरीयम' को पार करने पर तुरीयातीत कहते हैं। यहां पर कुछ नहीं होता है सिर्फ महाशून्य होता है, इसी को सहस्रार स्थिति कहते हैं, निर्विकल्प समाधि कहते हैं। ऐसे लोगों को 'ब्र्म्म विध्वरिष्टा' कहते हैं।

एक प्रकार से मैं अलग, परमात्मा अलग नहीं, दोनों एक ही है का अनुभव पाना है। इसी को 'जीव ब्र्म्मैक्यम' कहते हैं। यहां जीव और ब्र्म्म अलग नहीं है, दोनों एक ही है!

अगर आप इस स्थिति तक पहुंचते हैं, कि यह जीव और देवता अलग नहीं है। उस ब्र्म्म और जीव अलग नहीं है। इस जीवात्मा ही पर ब्र्म्म है का अनुभव पाते हैं। तब वही आखिरी स्थिति है।

बहुत लोग कहते हैं कि ध्यान हर रोज़ कर रहे हैं, और कितना दिन करना है। ध्यान कोई मामूली विषय नहीं है। ध्यान कब तक करना है? यह निर्विकल्प स्थिति पाने तक करना चाहिए। यह स्थिति पहुंचने वाला बहुत महान है। दृढ़ निश्चय होने वाला इस स्थिति पाने तक नींद नहीं लेते हैं। असलियत

में इस मार्ग में आने के लिए ही बहुत जन्म लगते हैं। हम कुछ ना कुछ कारण बताकर यह रास्ता छोड़ देते हैं।

भगवत गीता में भी कहा है ना, कि लाखों लोग में कुछ हजारों लोग इस मार्ग में आते हैं, उनमें से कुछ सैकडों लोग ही इसमें आगे बढ़ते हैं, और उसमें भी बहुत कम लोग कठोर साधना करते हैं, उसमें आखिर में एक या दो उस परिपूर्ण स्थिति पाते हैं।

लेकिन लोग कई कारणों से हर रोज आ नहीं पा रहे हैं। लेकिन थोड़ा कष्ट कर कर जितना हो सकता है, उतना ही करने से, कम से कम, अगला जन्म में हमें अनुकूल जन्म मिलेगा। इसलिए याद रखिए कि जितना भी समस्याओं है, दृढ़ निश्चय और श्रद्धा के साथ हासिल कर सकते हैं।

इसलिए 'मैं यह शरीरे नहीं हूं', 'मैं आत्मा हूं' इन को बार-बार याद रखना है। अगर आप 'मैं आत्मा हूं' का विषय याद रखते हैं, बार-बार, तब आपका दृढ़ निश्चयता बढ़ता रहेगा। लेकिन अगर आप देह समझेंगे आप माया में फसेंगे। यह मेरा संसार है ना? मेरे बच्चे हैं ना? मेरा परिवार है ना? करके माया में चले जाते हैं।

अगर मैं आत्मा हूं का अवगाहन रहता है तब आप समझेंगे कि यह सब लोग तत्कालीन है, अपने अनुभवों के लिए इस संसार में आए हैं। साथ में आप अपने के लिए कृषि करना चाहिए का समझ आता है। क्योंकि हम सब आत्माएं हैं। इस पृथ्वी पर एक प्रणालिका के साथ आए हैं। वह क्या है? इस जन्म में कुछ अनुभव पाने के लिए और कुछ पाठों सीखने के लिए, ज्ञान प्राप्त करके, आत्मा का उन्नति के लिए ही यह शरीर है। बल्कि मौज मस्ती करने नहीं है।

याद रखिए कि अगर एक भी दिन आत्मा के लिए नहीं करने से आप को बहुत नष्ट होंगे।

यह जन्म भी ऐसे नहीं आया है, ऊपर लोकों में कुछ सैकडों सालों

इंतजार करने पर इस शरीर मिला है। ऐसे बहुत कष्ट करके यह शरीर मिला है। आखिर में हमें पत्री जी जैसे गुरु मिलना, हमारा खुश किस्मत है। तब यह अवसर क्यों खोना चाहिए?

क्योंकि? इस जीवन में बहुत मुसीबतें होते हैं, समस्याओं हैं। इन सबको पार कर कर आत्मा का उन्नति के लिए कृषि करना चाहिए। क्योंकि? जब हम जो करना है करेंगे तब जो पाना है जरूर पायेंगे। इसलिए याद रखिए हमारे उन्नति के लिए और हमारे बढ़ोत्तरी के लिए ही इस शरीर को पाए हैं। यह बात भूलना नहीं है।

इसलिए सप्त ज्ञान भूमिकाओं को हमें हासिल करना चाहिए। इसके लिए गुरु का सहायता आवश्यक है। कारण यही है कि गुरु हर वक्त हमारे गलतियों को बताकर, समय-समय पर हमें चेतावनी देता रहता है।

इसलिए थोड़ा कष्ट कीजिए।

जैसे अवतार मेहर बाबा कहते हैं कि एक साधक को गुरु का सहायता बहुत आवश्यक है। यह जानिए। सद्गुरु का आश्रय करिए ।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।...............................Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।................................Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।......................Rs.160/-
4) एक और जन्म ।..............................Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।....................................Rs.160/-
6) मरने से पहले मरना है।......................Rs.130/-
7) 'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
8) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
9) कर्म सिद्धांत ।..................................Rs.120/-
10) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ...................Rs.120/-
11) ब्रह्म ज्ञान।.......................................Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ?.............................Rs.100/-
13) मेहर बाबा का संदेश।........................Rs.100/-
14) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
15) भागवत के दृश्यों का अर्थ........................ Rs.80/-
16) ज्ञान माला.. Rs.70/-
17) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं। Rs.70/-
18) दुख निवारण का मार्ग Rs.75/-
19) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
20) निर्वाण मार्ग Rs.60/-
21) सत्य.. Rs.50/-
22) क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
23) गुरु को पहचानना कैसे ? Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

मेहर बाबा का संदेश ।

'एक साधक अपना अन्वेषण ज़रिया बहुत दूर तक जा सकता है, लेकिन बिना गुरु का सहायता, वह 6 वाँ - भूमिका को पार करना ना मुमकिन है', कहते हैं मेहर बाबा जी । यह 6 वाँ - भूमिका क्या है? पत्री जी हमें सप्त ज्ञान भूमिकाओं के बारे में बता चुके हैं। हमारा इस आध्यात्मिक यात्रा में मतलब आत्मा की यात्रा में मध्यांतर भूमिकाओं में भी फस जा सकते हैं, कहते हैं मेहर बाबा जी।

लेकिन बाबा जी और क्या कहा है? एक गुरु, एक साधक को ऐसे ना फसने देकर, आध्यात्मिक मार्ग में भरा हुआ पतन अवस्थाओं से और मुसीबतों से, एक साधक को रक्षा करता है। कारण इस मार्ग में कितने मुसीबतें हैं ? कितने पतन अवस्थाओं हैं? वह गुरु को अच्छी तरह मालूम है, इसलिए .....उनसे एक साधक को बचाता है। 'आध्यात्मिक मार्ग में न केवल एक भूमिका में, सारे भूमिकाओं में भी ऐसे पतन अवस्थाओं से, गुरु, एक साधक को बचाता है', कहते हैं मेहर बाबा जी ।

Rs.100/-